

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION



AN ABODE OF EDUCATION
KANDRI, MANDAR, RANCHI

B.Ed.

SESSION : 2018-20

EPC-I

PROJECTS

Internal Copy

Guided by :

Asst. Prof

Binita Choudhry

Submitted by :

Name : Nutan Toppo

Roll No. : 041

Date :

Attested

Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



KANDORI, KANDORI, KANDORI

1993

1993: 1993

1993

1993

1993

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है नूतन टोप्पो बी० एड० की प्रशिक्षु ने कहानी दो बैलो की कथा, उपन्यास रागदारबरी, भारतीय संस्कृति एवं लेखन कला मणिपुर पर व्याख्याता विनिता चौधरी के देख रेख में परियोजना कार्य के रूप में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया ।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा।

प्रशिक्षु का नाम

नूतन टोप्पो

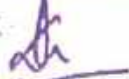
2018-20

व्याख्याता का नाम

विनीता चौधरी

हस्ताक्षर

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

आभार ज्ञापन

शिक्षा मुख्य रूप से द्विपक्षीय प्रक्रिया है। जिसमें सीखना और सीखना दोनों महत्वपूर्ण हैं। बी० एड० कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक स्तर पर निर्देश परामर्श आदि दोनों क्षेत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है।

बी० एड० कार्यक्रम को पूर्ण करने में समस्त व्याख्यातागण का सहयोग रहा। इसमें हमें व्यक्ति में कहानी दो बैलों की कथा, उपन्यास रगदरबरी, तथा भारतीय संस्कृति एवं लेखन कला मणिपुर की जानकारी प्राप्त हुई।

मैं सक्रिय कार्य के लिए सबसे पहले महाविद्यालय के शैक्षणिक सचिव दीपाली परासर प्रभारी PRO/LEC राकेश कुमार राय एवं व्याख्याता बिनीता चौधरी का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके निर्देशानुसार सक्रिय कार्य पूर्ण किया।

मैं अपने पुस्तकालय अध्यक्ष प्रतिमा जयसवाल कभी धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे सक्रिय कार्य से संबंधित पुस्तकों को उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान किया।

धन्यवाद

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



INDEX

क्रं.सं.	विषय	पृ. सं.	अभियुक्ति
1)	Project 1 - दो बँलों की कथा (प्रेमचंद)	1-16	
2)	Project 2 - रागदरवारी (श्रीलाब शुक्ल)	17-40	
3)	Project 3 - भारतीय संस्कृति एवं लेखन कला (मणिपुर)	41-58	

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

INDEX

Page	Topic	Page	Topic
1	Introduction	1	Introduction
2	Chapter I	2	Chapter I
3	Chapter II	3	Chapter II
4	Chapter III	4	Chapter III
5	Chapter IV	5	Chapter IV
6	Chapter V	6	Chapter V
7	Chapter VI	7	Chapter VI
8	Chapter VII	8	Chapter VII
9	Chapter VIII	9	Chapter VIII
10	Chapter IX	10	Chapter IX
11	Chapter X	11	Chapter X

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION



An Abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

EPC-1

Reading And Reflecting On Texts

Project-1

INTERNAL

दो बैलों की कथा

प्रेमचंद

Guided By

Prof/Lect. Binita Choudhary

Submitted By

Name- Nutan Toppo

Roll no- 41

Session- 2018-20

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

INTERNATIONAL COLLEGE OF EDUCATION



An Agency of Education

World Education Council

1901

London and Kensington, 1901

1901

1901

1901

1901

1901

1901

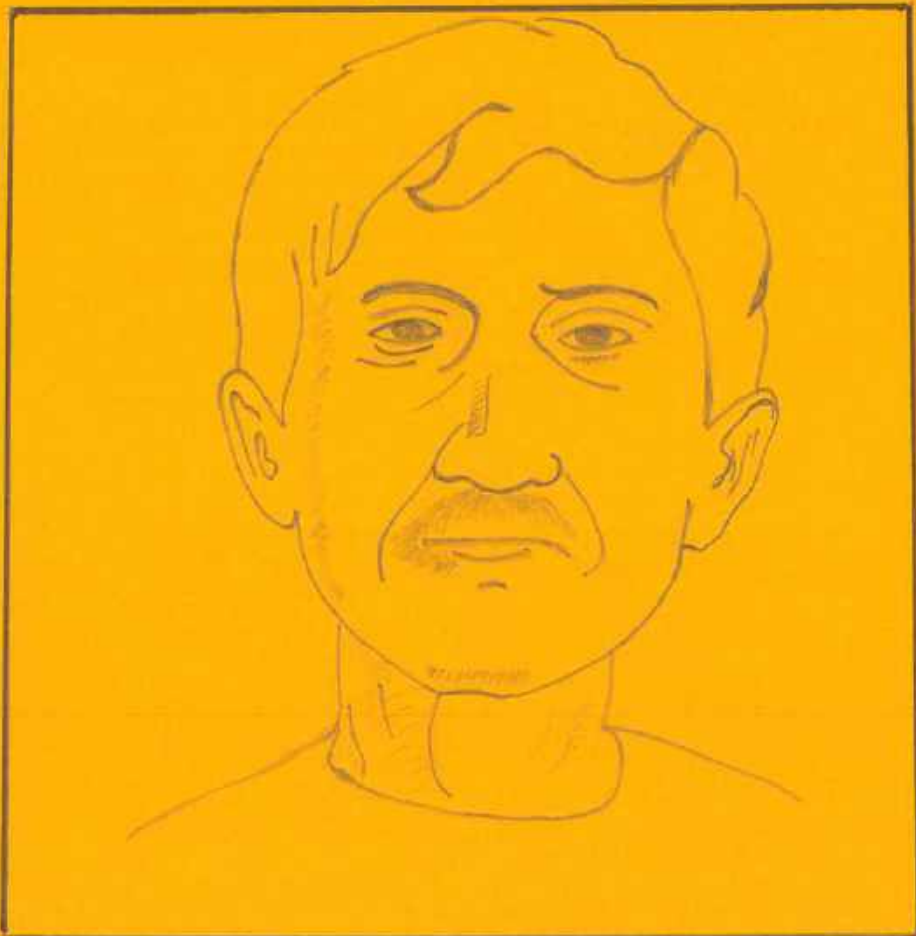
1901

1901

1901

1901

कहानी
दो बैलों की कथा
(प्रेमचंद)



पथवेक्षक

प्राशिक्षक

नूतन टोप्यो

Attested

Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



लेखक परिचय

प्रेमचंद

प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 ई. को वाराणसी के निम्न लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता अजायबराय, जो लमही में डाकमुखी थे। मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव, प्रेमचंद को नवाब राय और मुखी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया था। प्रेमचंद ने हिंदी कथानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। आगामी एक पूरी पीढ़ी को

Attested

Principal

Bharathi College of Education
Kandla, Mandar, Ranchi



(2)

गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचंद ने साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी। उनका लेखन हिंदी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिंदी के विकास का अध्ययन अधूरा है। वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा विद्वान संपादक थे। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में जब हिंदी में तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, उनका योगदान अतुलनीय है।

प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह और उपन्यास सम्राट माने जाते हैं। उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक रचयारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती हैं। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरुआत की। "भारतीय साहित्य का बहुत सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य उसकी जड़ें वहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं।" प्रेमचंद के लेख "पहली रचना" के अनुसार उनकी पहली

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



रचना अपने मामा पर लिखा व्यंग्य थी, जो अब अनुपलब्ध है। उनका पहला उपलब्ध लेखन उनका उर्दू उपन्यास 'असरौर मजाबिद' है। प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'हमरतूमी व हमसवाब', जिसका हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1904 में प्रकाशित हुआ।

प्रेमचंद की रचना-दृष्टि विभिन्न साहित्य रूपों में उपन्यास प्रवृत्त हुई। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में कर्पाकार के तौर पर हुई और अपने जीवन काल में वे उपन्यास सम्राट की उपाधि से सम्मानित हुआ।

जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। उनका उपन्यास मंगलसूत पूरा नहीं हो सका। और लंबी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया। उनका अंतिम उपन्यास मंगलसूत उनके पुत्र अमृत ने पूरा किया।

The first part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $f(x)$ defined by the equation $f(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!}$. It is shown that $f(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $f'(x) = f(x)$. The second part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $g(x)$ defined by the equation $g(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!} \ln n$. It is shown that $g(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $g'(x) = g(x) + \frac{1}{x}$.

The third part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $h(x)$ defined by the equation $h(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!} \ln^2 n$. It is shown that $h(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $h'(x) = h(x) + \frac{2}{x}$. The fourth part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $k(x)$ defined by the equation $k(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!} \ln^3 n$. It is shown that $k(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $k'(x) = k(x) + \frac{3}{x}$.

The fifth part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $l(x)$ defined by the equation $l(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!} \ln^4 n$. It is shown that $l(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $l'(x) = l(x) + \frac{4}{x}$. The sixth part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $m(x)$ defined by the equation $m(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!} \ln^5 n$. It is shown that $m(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $m'(x) = m(x) + \frac{5}{x}$.

The seventh part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $n(x)$ defined by the equation $n(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!} \ln^6 n$. It is shown that $n(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $n'(x) = n(x) + \frac{6}{x}$. The eighth part of the paper is devoted to the study of the properties of the function $o(x)$ defined by the equation $o(x) = \sum_{n=0}^{\infty} \frac{x^n}{n!} \ln^7 n$. It is shown that $o(x)$ is a continuous function and that it satisfies the differential equation $o'(x) = o(x) + \frac{7}{x}$.

कहानी के पात्रों का परिचय

मुरी - किसान

मुरी की पत्नी

हीरा और मोती - मुरी के बच्चे

गया - मुरी का साला

कांजीदास का चौकीदार

कांजीदास के जानवर - गधा, भैंस, बकरी,
घोड़ों का झुंड

मुरी के गाँव के लत्ते

गया के गाँव के ठूढ़ आदमी

एक छोटी लड़की

एक साँड़

कड़ियाल आदमी

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

1947-48 to 1950-51

कहानी का परिचय

दो बेलों की कथा, कहानी दो बेलों के बारे में है, जो अपने मालिक से बहुत प्यार करते थे और जिसमें आपस में भी गहरी मित्रता थी। दोनों बेल स्वामिमानी, बहादुर और परीपकारी हैं। बहुत दिनों साब रहते-रहते दोनों में माई-चारा हो गया था। उनका मालिक उन्हें बड़े स्नेह से रखता है। लेकिन एक बार दोनों बेलों को मालिक के ससुराल भेज दिया जाता है। नये जगह पर उचित सम्मान नहीं मिलने के कारण दोनों बेल वहाँ से भागकर अपने असली मालिक के पास आते हैं। उन्हें दोबारा नये ठिकाने पर भेज दिया जाता है। जब वे दोबारा भागने की कोशिश करते हैं तो कई मुसीबतों में फँस जाते हैं। आखिर में उन्हें किसी कसाई के हाथ नीलाम कर दिया जाता है। लेकिन दोनों बेल उस कसाई के चंगुल से भागने में भी कामयाब हो जाते हैं और अंत में अपने असली मालिक झुरी के पहुँच जाते हैं। यह कहानी दो बेलों की कथा, बहुत ही रोचक और सरल भाषा में लिखी गई है।

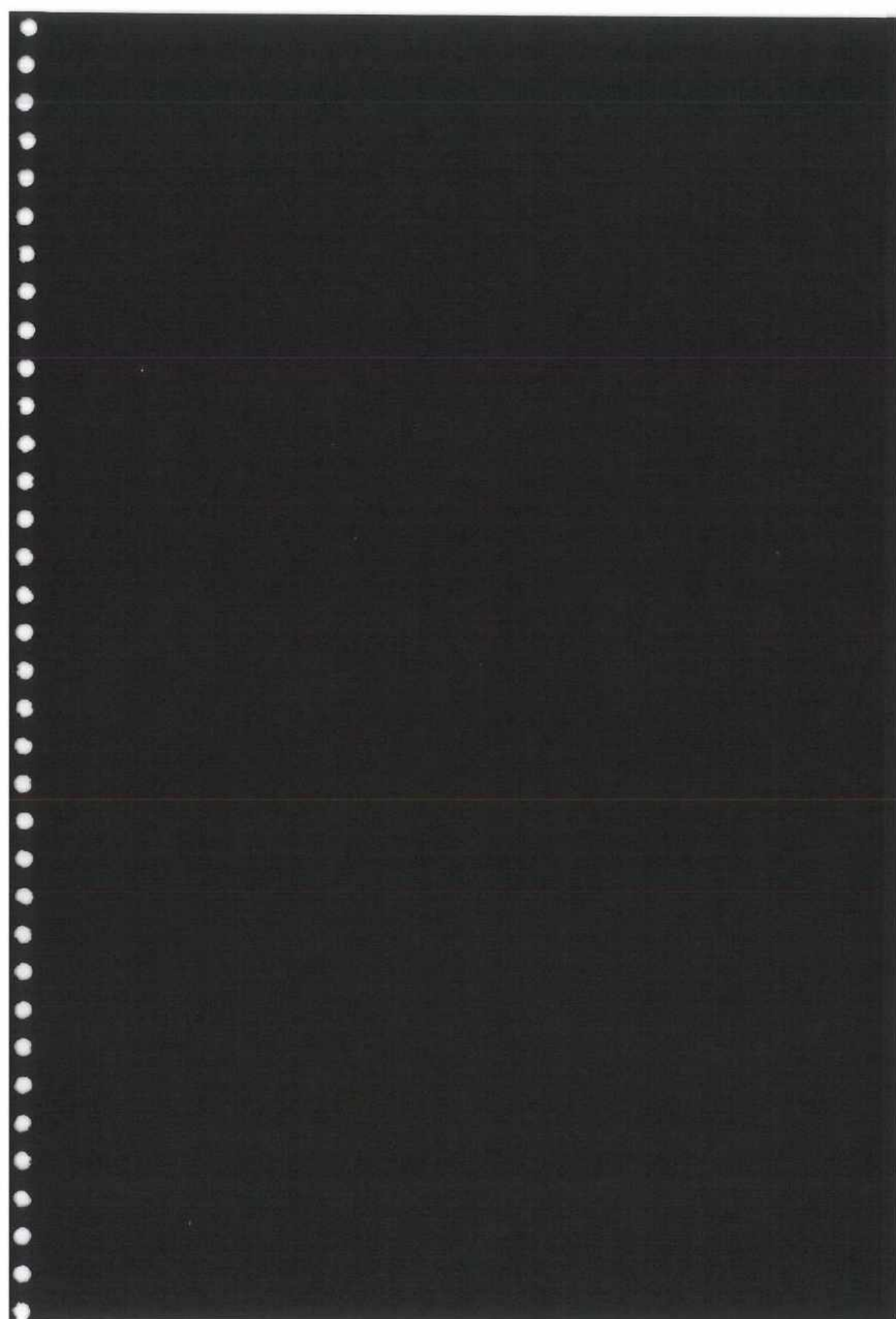
Attested

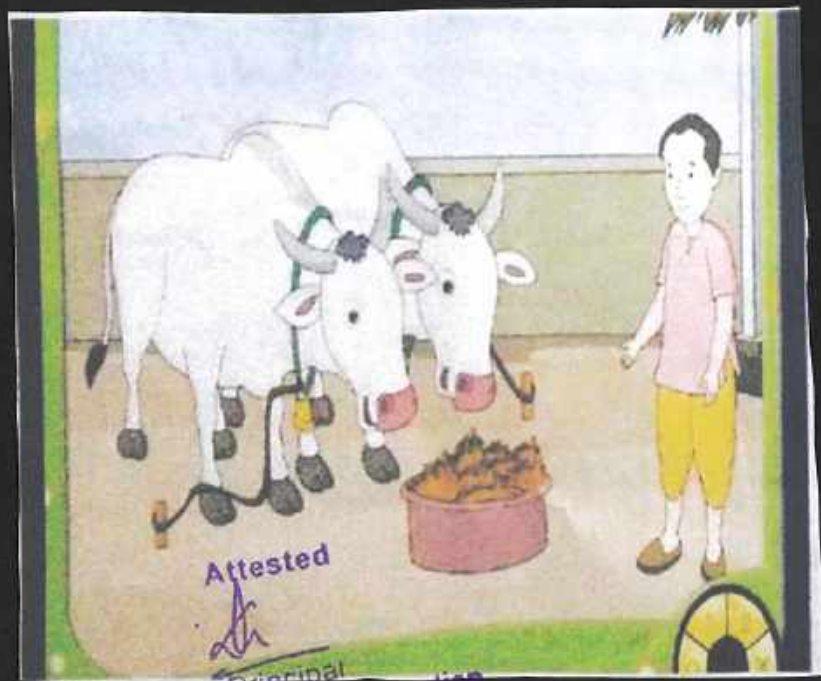


Principal

 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi







दो बैलों की कथा



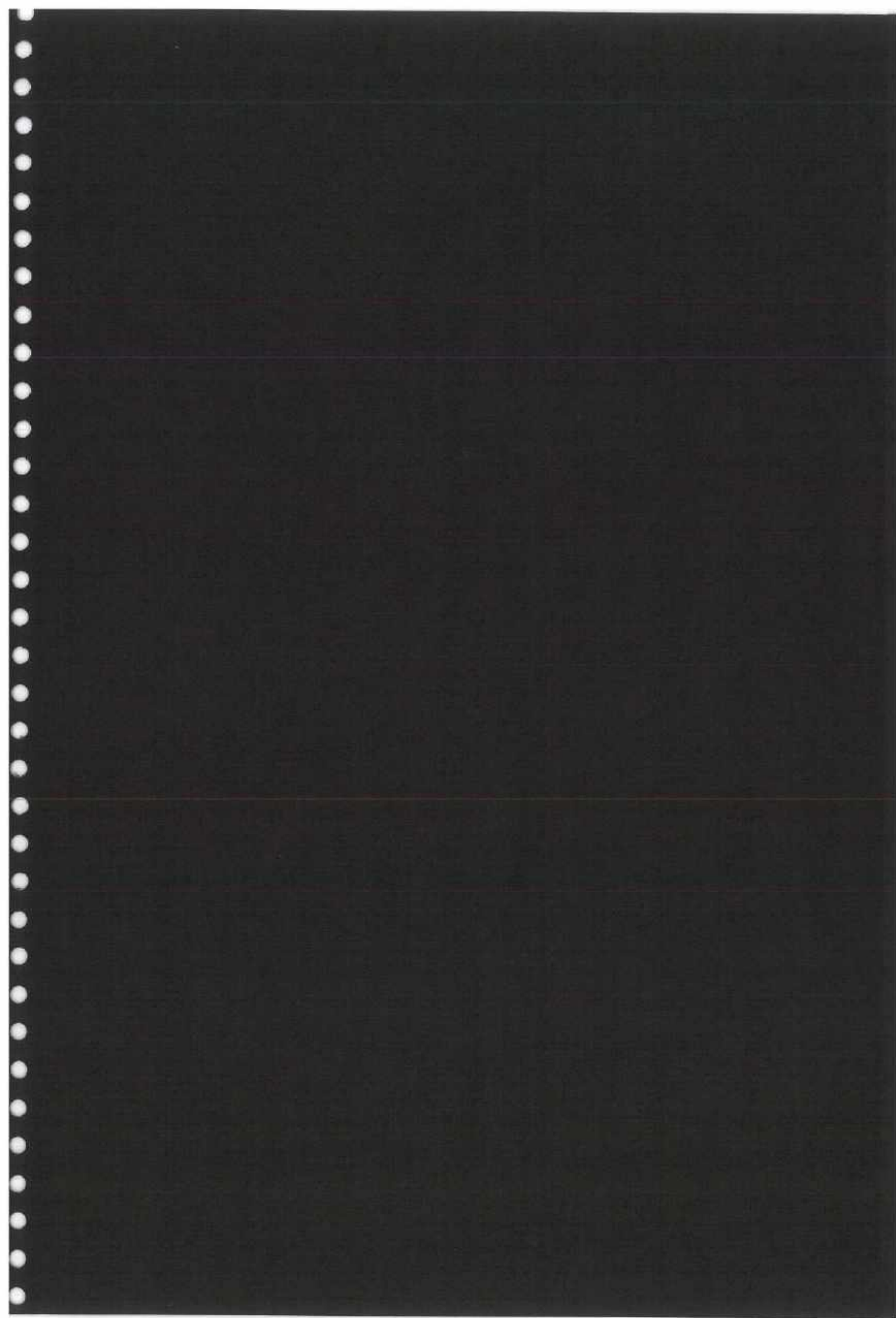
लेखक के अनुसार गाथा एक सीधा और निरापेक्ष जानवर है। वह सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में कभी नहीं बदलता। उसमें ऋषि-मुनियों के गुण होते हैं, फिर भी आदमी उसे बेवकूफ कहता है। बैल गांधी के दोटे भाई हैं जो कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट करते हैं।

झुरी काढ़ी के पास हीरा और मौती नाम के दो स्वस्थ और सुंदर बैल थे। वह अपने बैलों से बहुत प्रेम करता था। एक बार झुरी ने दोनों को अपने ससुराल के खेतों में काम करने के लिए भेज दिया। वहाँ उसने खूब काम करवाया लेकिन खाने में खरवा-सुरवा ही दिया जाता था। अतः दोनों रस्सी तोड़कर झुरी के पास भाग आए। झुरी उन्हें देखकर बहुत खूश हुआ और तब उन्हें खाने-पीने की कमी नहीं रही। दोनों बहुत खूश थे। मगर झुरी की पत्नी को उनका भागना पसंद नहीं आया। उसने उन्हें खरी-खोटी और खाली सुरवा भूसा खिलाया गया। दूसरे दिन झुरी का साबा फिर आया और उन्हें फिर कड़ी मेहनत करनी पड़ी पर खाने को सुरवा भूसा ही मिला।

Attested

Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi





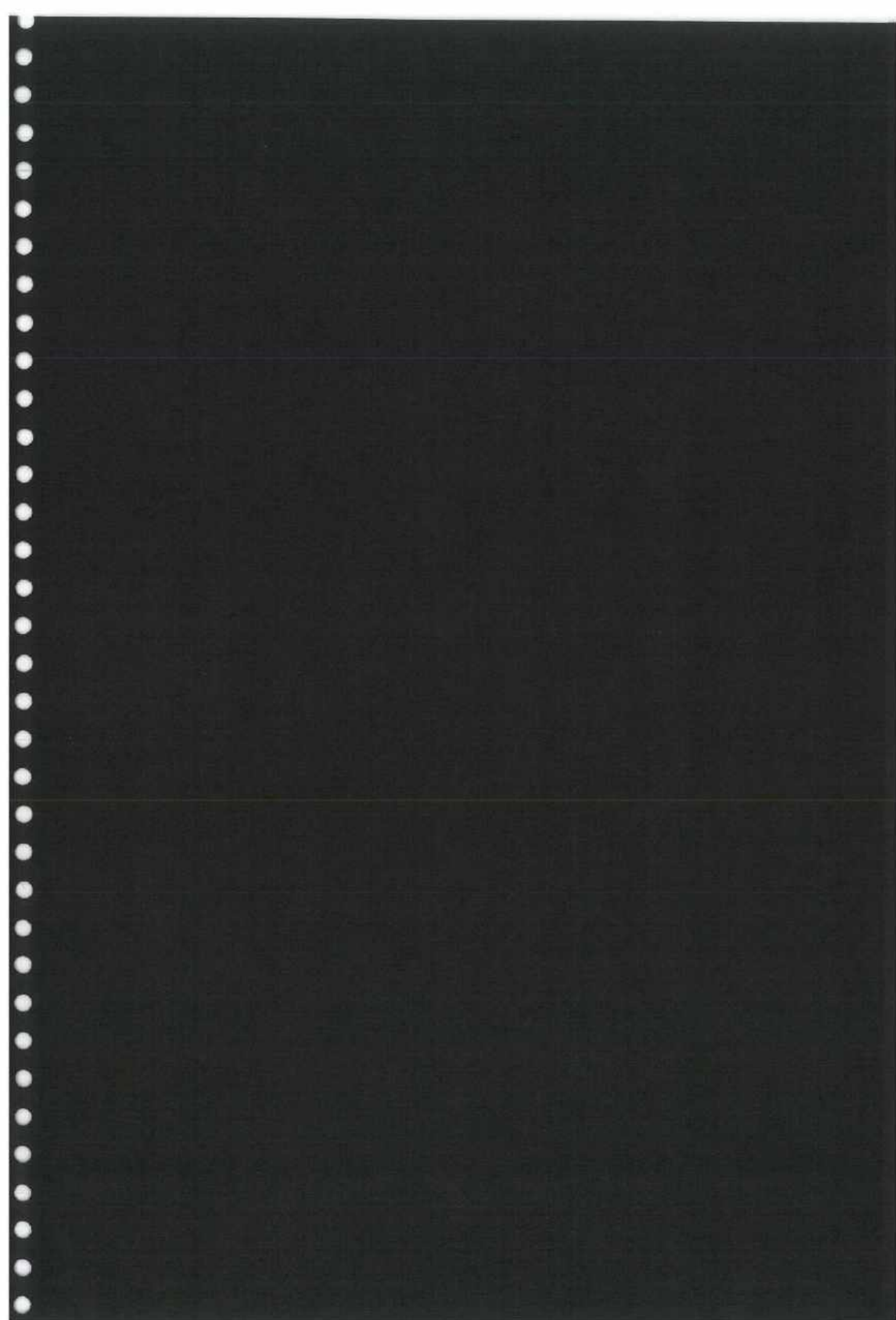
कई बार काम करते समय मौती ने गाड़ी खाई में गिरानी - चाही तो हीरा ने उसे समझाया। मौती बड़ा गुस्सेल था, हीरा धीरज से काम लेता था। हीरा की नाक पर जब खूब डंटे बरसाए गए तो मौती गुस्से से हल लेकर भागा पर गले में बड़ी रस्सियाँ होने के कारण पकड़ा गया। कभी - कभी उन्हें खूब मारा - पीटा जाता था। इस तरह दोनों की हालत बहुत खराब थी।

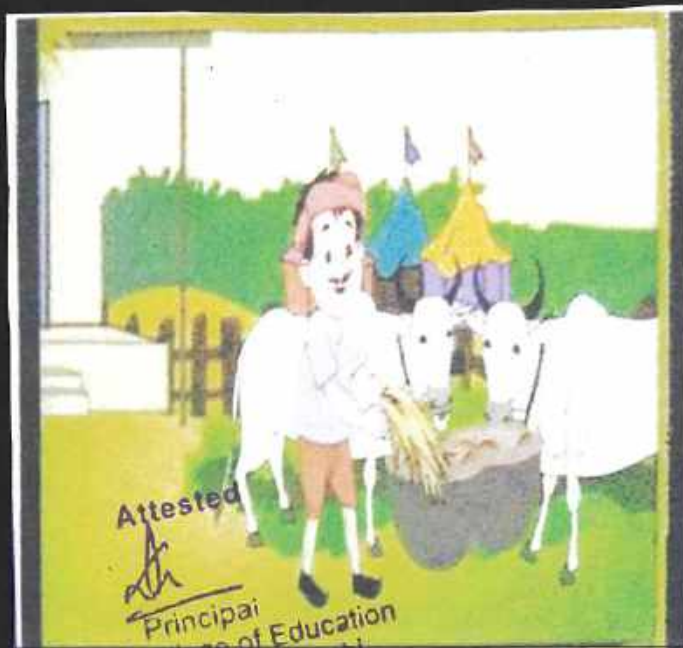
वहाँ एक दौरी - सी बालिका रहती थी। उसकी माँ मर चुकी थी। उसकी साँतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए उन बच्चों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी। वह रोज दोनों की दशा बहुत खराब थी। एक दिन उस बालिका ने उनकी रस्सियाँ खोल दी। दोनों भाग खड़े हुए। झुरी का साला और दूसरे लोग उन्हें पकड़ने दौड़े पर पकड़ न सके। भागते - भागते दोनों नई जगह पहुँच गए। झुरी के घर जाने का रास्ता वे भूल गए। फिर भी बहुत खुश थे। दोनों ने खेतों में मटर खाई और आजादी का अनुभव करने लगे। फिर एक साँड से उनका मुकाबला हुआ। दोनों ने मिलकर उसे मार मगाया, लेकिन खेत में चरते समय मानिक आ गया। मौती को फँसा देकर हीरा भी खूद आ फँसा। दोनों काँजीहोस में बंद कर दिए गए। वहाँ और भी जानवर बंद थे। सबकी हालत बहुत खराब थी। जब हीरा - मौती को रात को भी भोजन न मिला तो दिल में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। फिर एक दिन दीवार गिराकर

Attested

Principal

Bharathi College of Education
Mandla, Ranchi





को रात को भी भोजन न मिला तो दिल में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। फिर एक दिन दीवार गिराकर दोनों ने दूसरे जानवरों को भगा दिया। मौली भाग सकता था पर हीरा को बंधा देखकर वह भी न भाग सका।

काँजीहोंस के मालिक को पता लगाने पर उसने मौली को खूब मरम्मत की और उसे मोटी रस्सी से बांध दिया। एक सप्ताह बाद काँजीहोंस के मालिक ने जानवरों को कसाई के हाथों बेच दिया। एक दृढ़ियल आदमी हीरा - मौली को ले जाने लगा। वे समझ गए कि अब उनका अंत समीप है। चलते - चलते अचानक उन्हें लगा कि वे जान - पहचान राह पर आ गए हैं। उनका घर नजदीक आ गया था। दोनों अचानक भागे और झुरी के द्वार पर आकर रुड़े हो गए। झुरी ने देखा तो बहुत रवृश हुआ। वह उनसे लिपट गया। अचानक दृढ़ियल आदमी पहुँचा और उन्हें मारने लगा। झुरी ने कहा - मेरे बँल हैं। दृढ़ियल आदमी ने कहा - तुम्हारे बँल कैसे? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिख आता हूँ। मैं तो समझा हूँ चुराख लिख आते हो। चुपके से चले जाओ। मेरे बँल हैं। मैं बैचुंगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बँल नीलाम करने का क्या अधिकार है?

Handwritten notes at the top left of the page.

Main body of handwritten text, appearing to be a letter or a journal entry, written in a cursive script. The text is somewhat faded and spans most of the page.



मौती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका, पर खड़ा दड़ियल आदमी का रास्ता देख रहा था। दड़ियल आदमी दूर खड़ा होकर पत्थर फेंक रहा था। और मौती विजयी शूर को भाँति उसी रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग यह तमाशा देखकर हँस रहे थे।

अब दड़ियल हारकर चला गया, तो मौती अकड़ता हुआ लौटा। हीरा ने कहा - मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।

'अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मरि न दौड़ता।'

'अब न आरगा।'

'आरगा तो दूर से ही खबर लूँगा। देखूँ कैसे बेजाता हूँ।'

'मर जाऊँगा, पर उसके काम न आऊँगा। हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता, इसलिए कि हम इतने सौधे हैं।'

जरा देर में नाँदों में खली, मूसा, चौकर और दाना भर दिया गया और दोनों मिला खाने लगे। शूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के खड़े तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उदाह - सा मालूम होता था।

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



मैं उदाह - सा मालूम होता था । उसी समय
बुरी की पत्नी भी भीतर से दौड़ी - दौड़ी
आई और दोनों बच्चों के मांवा चुम
लिया ।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



1. The first part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom. It is shown that the structure of the atom is determined by the laws of quantum mechanics, and that the structure of the atom is determined by the laws of quantum mechanics.

2. The second part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom. It is shown that the structure of the atom is determined by the laws of quantum mechanics, and that the structure of the atom is determined by the laws of quantum mechanics.



निष्कर्ष

'दो बैलों की कथा' प्रेमचंद द्वारा लिखित रचना है। प्रेमचंद अपनी रचनाओं के माध्यम से संदेश देने में माहिर हैं। समाज को अपनी रचनाओं के माध्यम से कैसे जगाया जाय, यह उन्हें बहुत अच्छी तरह आता है। यह कहानी सांकेतिक भाषा में यह संदेश देती है कि मनुष्य हो या कोई भी प्राणी, स्वतंत्रता को पाने के लिए लड़ना भी पड़े, तो बिना हिचकिचाए लड़ना चाहिए। जन्म के साथ ही स्वतंत्रता सबका अधिकार है। दो बैलों की कथा में बैलों के माध्यम से लेखक अपने विचार समाज के समक्ष रखता है। इस कहानी में दो भिन्न बैल अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। यह कहानी दो बैलों के बीच घनिष्ठ भावात्मक संबंध को दर्शाती है। यह कहानी मनुष्य और जानवर के बीच में उत्पन्न परस्पर संबंध का सुंदर चरित्र प्रस्तुत करती है।

Attested



Principal

 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्न - अभ्यास

1

लघु उत्तरीय प्रश्न

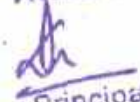
- (क) झुरी के बेलों का क्या नाम था ?
- (ख) लैरक के अनुसार कौन सा जानवर सीधा और निरपद है ?
- (ग) मौती का व्यवहार कैसा था ?
- (घ) हीरा का व्यवहार कैसा था ?
- (ङ) हीरा और मौती कहाँ बंद कर दिए गए ?
- (च) काँजीहोस के मालिक ने जानवरों को किसके हाथों बेच दिया ?

2.

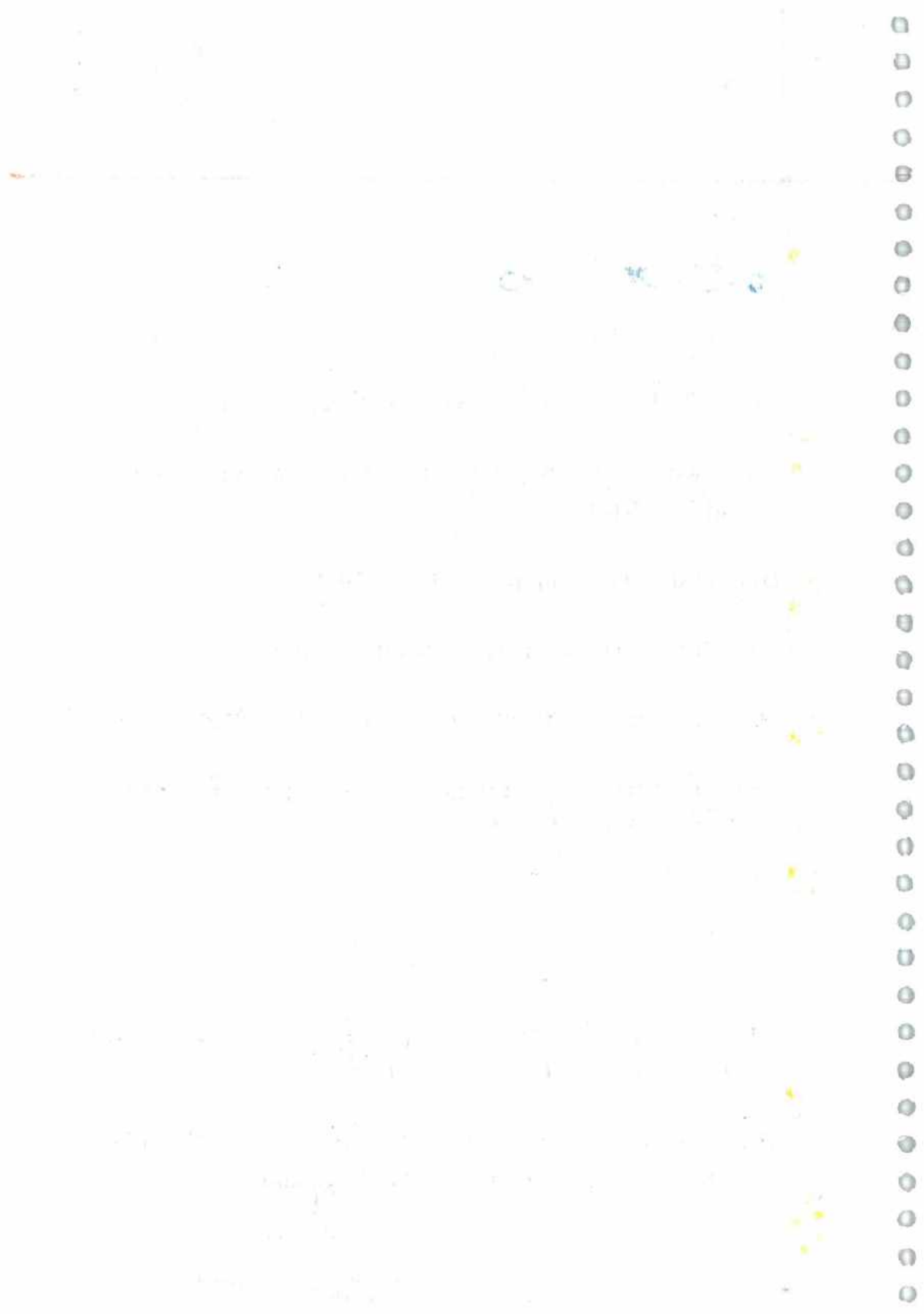
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- (क) लैरक ने इस कहानी में कौन सा जानवर को सीधा कहा है ? क्यों ?
- (ख) काँजीहोस में कौन से पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती थी ?

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



(ग) हीरा - मौली गया के घर से क्यों भाग आरु ?

(घ) हीरा - बालिका को बेलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया ?

(ङ) किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मौली में गहरी दोस्ती थी ?

(च) हीरा - मौली को आजाद होने में किन - किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ? वर्णन करें।

(ह) कहानी में बेलों के माध्यम से कौन - कौन से नीति - विषयक मूल्य उभर कर आरु हैं ?

③ खाली स्थानों को भरें

(क) झुरी के पास _____ बेल थे।

(ख) झुरी के बेलों का नाम _____ और _____ था।

(ग) मौली बड़ा _____ था।

(घ) हीरा _____ से काम लेता था।

(ङ) हीरा और मौली का मुकाबला एक _____ से हुआ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



(च) दोनों _____ में बंद कर दिख गए।

(4) सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (x) का निशान लगाएँ।

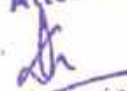
(क) झूरी के पास तीन बैल थे। []

(ख) मौती बहुत गुस्सैल था। []

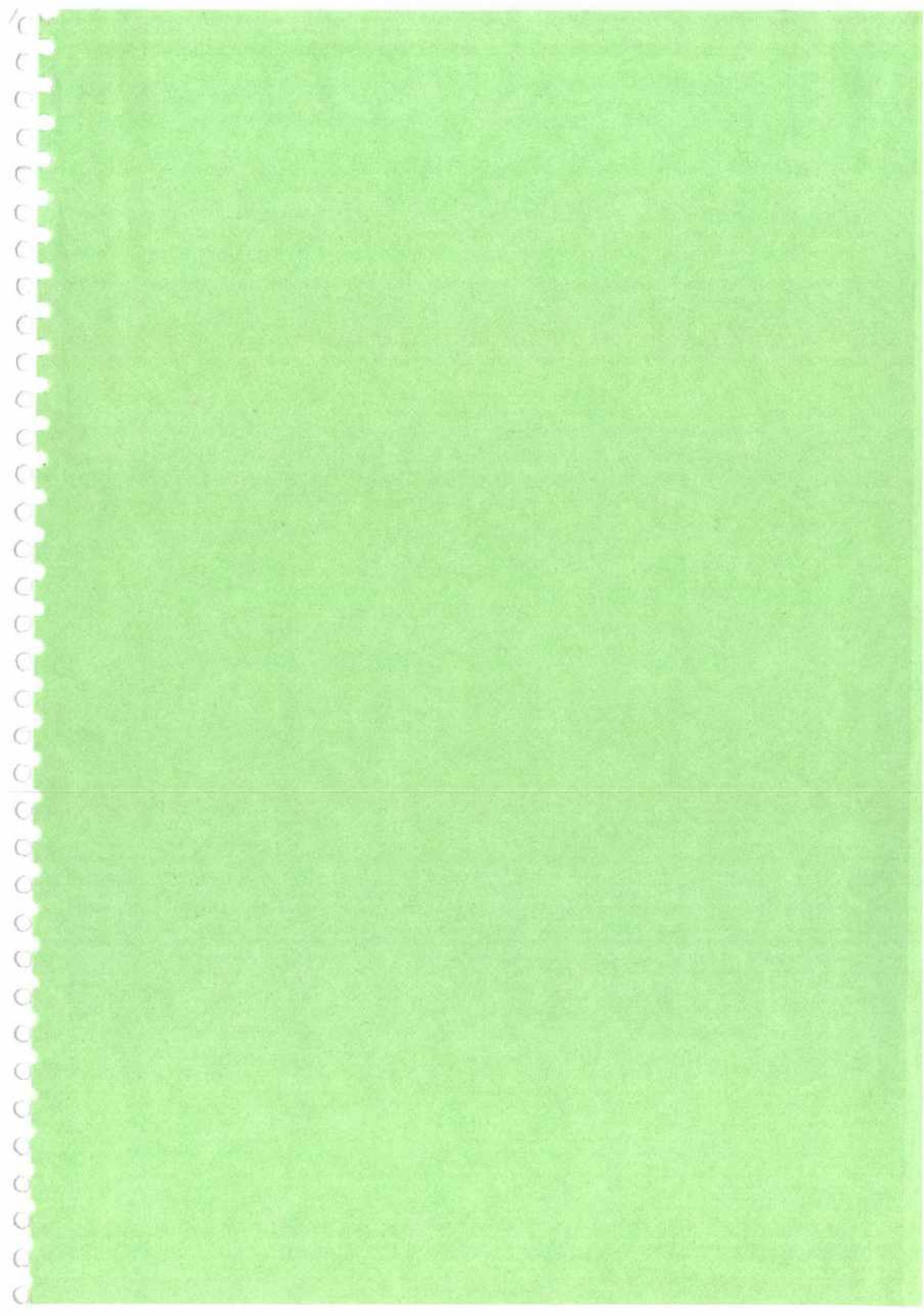
(ग) हीरा और मौती का मुकाबला एक साथ से हुआ। []

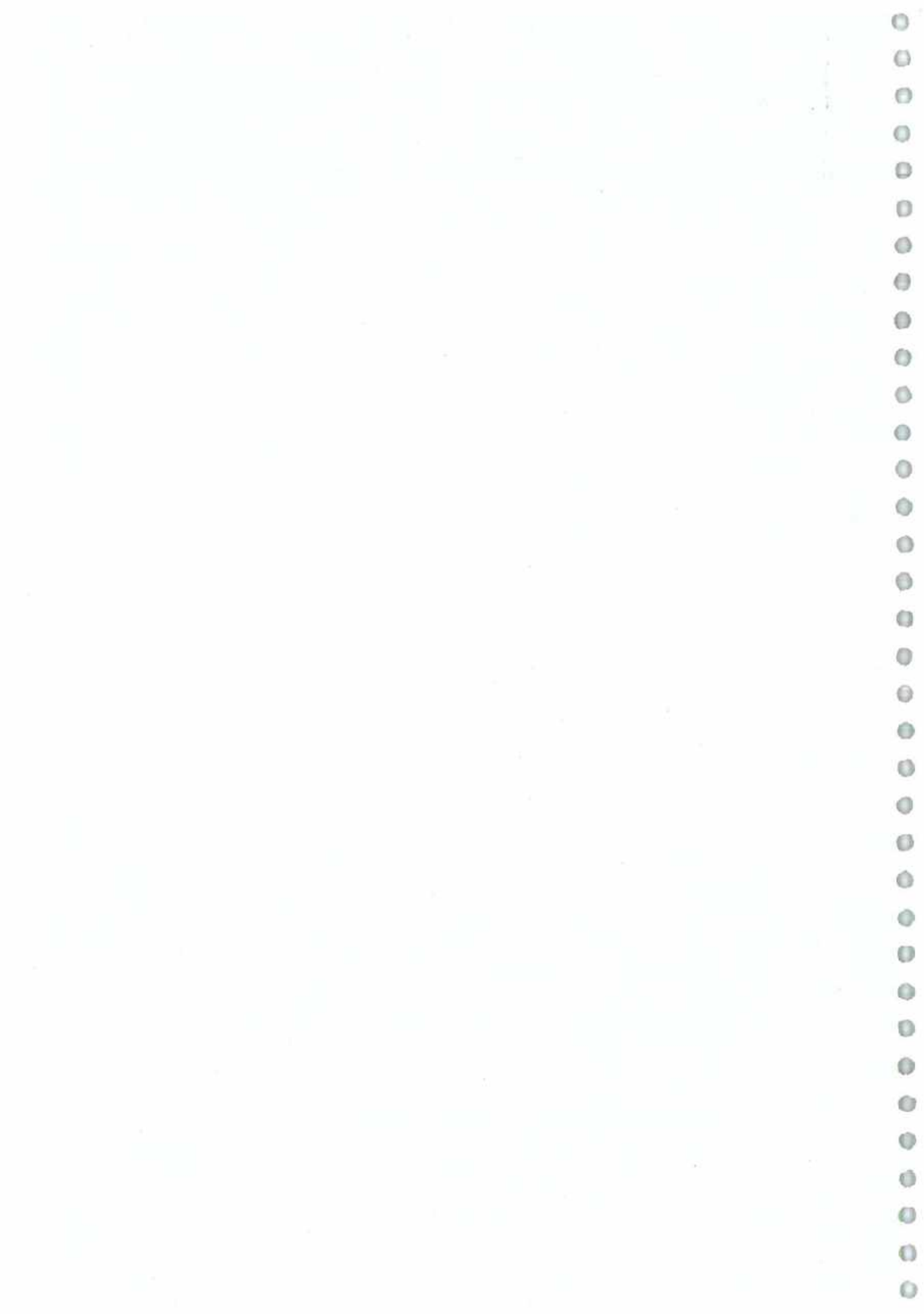
(घ) काँजीहोस में पशुओं की टाज़िरी नहीं ली जाती थी। []

(ङ) काँजीहोस में कई पशु बहुत मोटे और सुंदर थे। []

Attested

 Principal
 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi







BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION



An Abode Of Education

Kandari, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session 2018-20

PROJECT WORK- II.

ON

EPC - 1

READING AND REFLECTING TEXT

रागदरबारी (श्रीलाल शुक्ल)

INTERNAL

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

Guided By

Asst. Prof.

Binita Chaudhary

Submitted by:-

Name :- NUTAN TOPPO

Roll No :- 41

Attested

Principal

Bharathi College of Education
Kandari, Mandar, Ranchi



ANALYSIS OF THE
KANSAS HANDBOOK

1950

1950-1951

1951-1952

1952

ANALYSIS OF THE
KANSAS HANDBOOK
1950-1951
1951-1952
1952

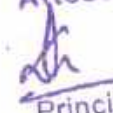
ANALYSIS OF THE
KANSAS HANDBOOK
1950-1951
1951-1952
1952

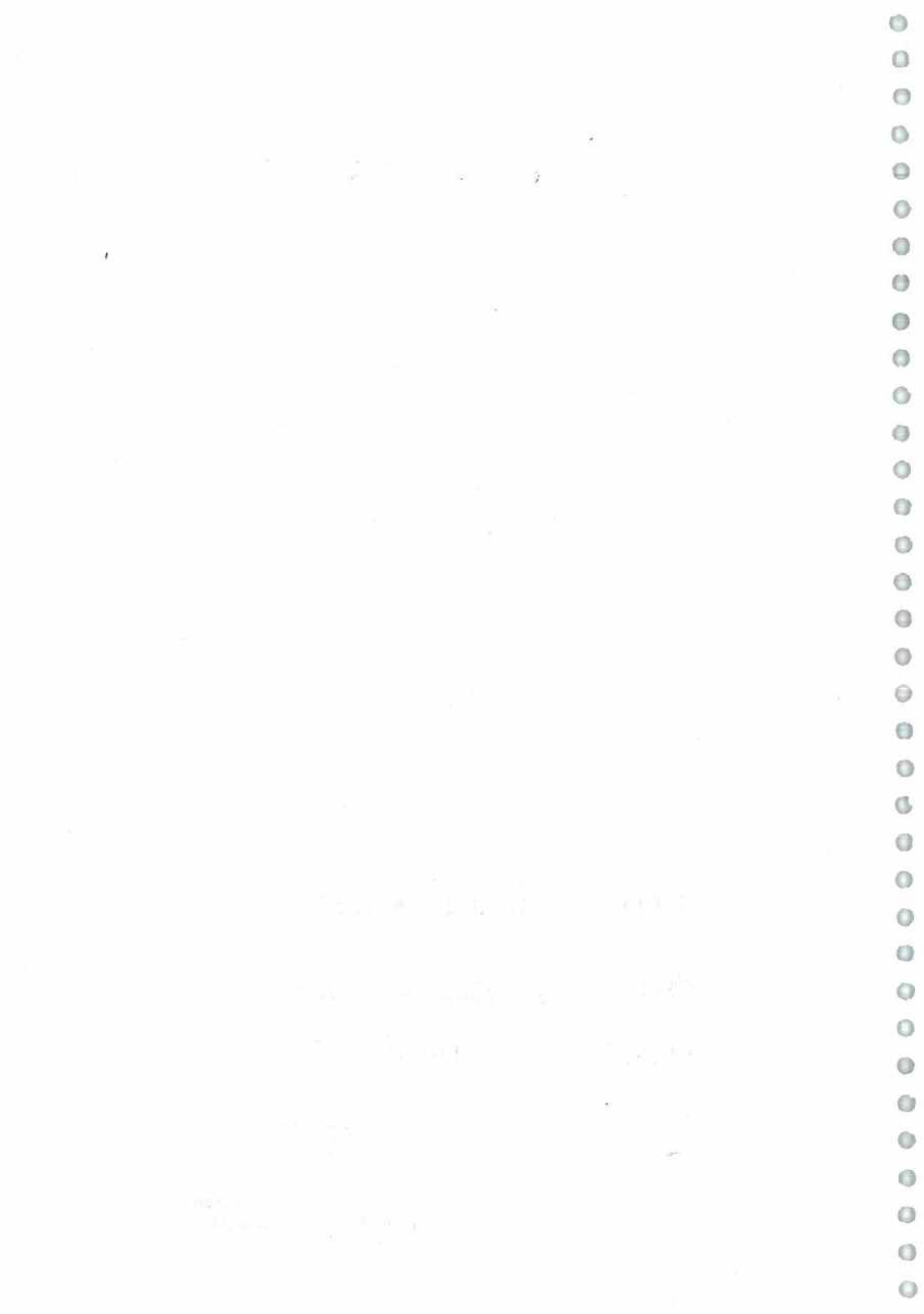


लेखक - श्रीलाल शुक्ल

जन्म - 31 दिसम्बर 1925

निधन - 28 अक्टूबर 2011

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



लैखक - परिचय

17

श्रीलाल शुक्ल (जन्म 31 दिसम्बर 1925 और निधन - 28 अक्टूबर 2011) को जनपद के समकालीन कथा - साहित्य में उद्देश्यपूर्ण व्यंग्य लेखन के लिये विख्यात साहित्यकार माने जाते थे। उन्होंने 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा पास की। 1949 में राज्य सिविल सेवा से नौकरी शुरू की। 1988 में भारतीय प्रशासनिक सेवा से निवृत्त हुए। उनका विधिवत लेखन 1954 से शुरू होता है और इसी के साथ हिंदी गद्य का एक गौरवशाली अध्याय आकर लेने लगता है। उनका पहला प्रकाशित उपन्यास 'सुनी धाटी का सूरज' (1957) तथा पहला प्रकाशित व्यंग्य 'अंगद का पाँव' (1958) हैं। स्वतंत्र के बाद के भारत के ग्रामीण जीवन की मुख्यधनीता को परत दर परत उखाड़ने वाले उपन्यास 'राजा दरबारी' (1968) के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके इस उपन्यास पर एक

Attested



पुरदर्शन प्यारावाहिक का निर्माण भी हुआ।
श्री शुक्ल को भारत सरकार ने 2008 में
पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया है।

श्रीलाल शुक्ल अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत
और हिन्दी भाषा के विद्वान थे। श्रीलाल
शुक्ल संगीत के शास्त्रीय और सुगम दोनों
पद्धतों के रासिक-मर्मज्ञ थे। 'कव्याक्रम' समारोह
समिति के वह अध्यक्ष रहे। श्रीलाल शुक्ल जी
ने गरीबी झेली, संघर्ष किया, मगर उसके
विलाप से बैरवक को नहीं मरा। उन्हें
नई पीढ़ी भी सबसे ज्यादा पढ़ती है। वे
नई पीढ़ी को सबसे अधिक समझने
और पढ़ने वाले वरिष्ठ रचनाकारों में से
एक रहे। श्रीलाल जी का लिखना और
पढ़ना रुका तो स्वस्थ के गंभीर कारणों
के चलते। श्रीलाल शुक्ल का व्यक्तित्व
बड़ा सहज था। वह हमेशा मुस्कराकर
सबका स्वागत करते थे। लेकिन अपनी
बात बिना लगा-लपेट कहते थे। व्यक्तित्व
की इसी खुबी के चलते उन्होंने सरकारी
सेवा में रहते हुए भी व्यवस्था पर करारी
चोट करने वाली राम-दरवारी जैसी रचना

Attested

2

Handwritten text in a cursive script, likely a letter or a page from a manuscript. The text is written in a single column and is mostly illegible due to the quality of the scan. It appears to be a formal document, possibly a letter of introduction or a record of a meeting. The text is written in a cursive script, likely a letter or a page from a manuscript. The text is written in a single column and is mostly illegible due to the quality of the scan. It appears to be a formal document, possibly a letter of introduction or a record of a meeting.

Handwritten signature or initials at the bottom of the page.

हिंदी साहित्य को दी।

उनका पहला उपन्यास 'सुनी घाटी का सूरज' 1957 में प्रकाशित हुआ। उनका सबसे लोकप्रिय उपन्यास राग दरबारी 1968 में दया। राग दरबारी का पंद्रह भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी में भी अनुवाद प्रकाशित हुआ। राग विराग श्रीलाल शुक्ला का आखिरी उपन्यास था। उन्होंने हिंदी साहित्य को कुल मिलाकर 25 खनारों दीं। इनमें मकान, पहला पड़ाव, अज्ञातवास और विग्रामपुर का संत प्रमुख हैं।

1969 में श्रीलाल शुक्ल को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। लेकिन इसके बाद जानपीठ के लिए 41 साल तक इंतजार करना पड़ा। इस बीच उन्हें बिरला फाउंडेशन का व्यास, सम्मान, यश भारती और पद्म भूषण पुरस्कार भी मिले। 18 अक्टूबर को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बी. एल. जोशी ने अस्पताल में ही जानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया था वर्ष 2008 में शुक्ल को पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पात परिचय

वैद्यजी - वह सभी गांवों की राजनीति के पीढ़े का मास्टरमाइंड है अपने वाक्य तैयार करने और उसके शब्दों को चुनने में बहुत स्पष्ट, वैद्यजी भी आधिकारिक तौर पर स्थानीय कॉलेज के प्रबंधक हैं।

रूपन बाबू - वैद्यजी के दोटे बेटे और कॉलेज के दानों के नेता, रूपन बाबू पिछले कई सालों से 10 वीं कक्षा में रहे हैं, उसी कॉलेज में, जहां उनके पिता प्रबंधक हैं रूपन सक्रिय रूप से सभी गांवों की राजनीति में शामिल हैं और गांव समुदाय द्वारा उनके शानदार गणित के कारण उनका सम्मान किया जाता है।
उपन्यास के अंत में, उसके व्यवहार में एक क्रमिक परिवर्तन देखा जा सकता है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

10

15.51P . 10.7P

15.51P . 10.7P

बट्टी अग्रवाल - अपने लालू के बड़े भाई बट्टी अपने पिता की सहभागिता से दूर रहती हैं और खुद को शरीर-निर्माण के अभ्यास में व्यस्त रखती हैं और अपने आग्रह की देखभाल करती हैं।

रंगनाथ इतिहास में एम. ए., रंगनाथ वैद्य जी के भतीजे हैं। वह लगभग 5-6 महीने के बिरु दुट्टी पर शिवलगंज आ गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि लैरवक शिक्षित व्यक्ति की आंखों के माध्यम से गांवों में दयनीय स्थिति को देखते हुए देखना चाहता है।

द्वैता पहलवान - गांव की राजनीति में एक सक्रिय पार्टनर बट्टी अग्रवाल के एक, गांव की राजनीति में एक सक्रिय सहभागिता हैं और वैद्यजी द्वारा बुलाए गए बैठकों में लगातार सहभागिता है।

प्रिंसिपल साहिब - जैसा कि नाम का अर्थ है, प्रिंसिपल साहिब, कामल विद्यालय इंटर कॉलेज का प्रचार्य हैं। कॉलेज में कर्मचारियों के अन्य सदस्यों के साथ उनका संबंध साविश का एक

Attested



महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

जोगनाव - स्थानीय मुंडे, लगभग हमेशा नौसे में वह प्रत्येक सिलेबल्स के बीच "रफ" ध्वनि डालने से एक अनूठी भाषा बोलती हैं।

सनीचर - उनका असली नाम मंगलदास हैं, लेकिन लोग उसे सनीचर कहते हैं। वह वैद्यजी का नौकर हैं और बाद में वैद्यजी द्वारा राजनीतिक रणनीति के उपयोग के साथ गांव की कठपुतली प्रधान (नेता) बनाया गया था।

बंगड - वह अस्थायी आम आदमी का प्रतिनिधि हैं जो मल्ट व्यवस्था के सामने झुकाता हैं, यहाँ तक कि दोरी-सी चीजें भी करने के लिए।

वैला - वैला शिवपालगंज के ही कपड़ा व्यापारी और स्थानीय दंगामल इंटर साइंस कॉलेज की प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष गयादीन की कुंवारी कन्या हैं। बीस वर्ष की युवती होने के साथ-साथ ग्राम सैविका के संपर्क में आकर उसने फिल्मी गीतों में प्रेमपत्र लिखना भी सीखा है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Mandla Ranchi

राग दरबारी

श्रीलाल शुक्ल

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

उपन्यास का परिचय

शिवपालगांव नगर से कुछ दूर बसा हुआ एक गांव है, जहाँ निष्क्रिय मनोवृत्ति का युवक रंगनाथ जो बौद्ध धर्म है, अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए अपने मामा वैद्यजी के पास आता है। वैद्यजी उस गांव की राजनीति के आधार-स्तंभ हैं, जिनकी अवस्था 62 साल की है पर राजधानियों में रहकर देश-सेवा करने वाले सैकड़ों महापुरुषों की तरह वे भी उमर के बावजूद बूढ़े नहीं हुए थे और उन्हीं महापुरुषों की तरह वैद्यजी की यह प्रतिज्ञा थी कि हम बूढ़े तभी होंगे जब कि मर जायेंगे और जब तक लोग हमें धकान न दिला देंगे कि तुम मर गये हो, तब तक अपने को जीवित ही समझेंगे और देश-सेवा करते रहेंगे।

वैद्यक के रूप में उनके दो ही खास नुस्खे हैं - 'गरीबों का मुफ्त इलाज' और 'फायदा न हो तो दाम वापस'। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास

Attested

[Signature]

Page 105 Page 106

The first part of the paper is a review of the literature on the topic of the effect of the environment on the development of the child. The second part is a description of the methods used in the study. The third part is a description of the results of the study. The fourth part is a discussion of the results of the study. The fifth part is a conclusion.

में जूरी और असैसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लंबरदार के रूप में करते थे। अब वे जो- ऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलेज के मैनेजर थे। वास्तव में इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ बितने युवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे, इसलिए उन्हें छुड़ापै में इन पदों को संभालना पड़ा था। एक वैद्यक के रूप में रोगों के छुट्टाने प्रकट और गुप्त दो वर्ग बना करते थे। दोनों तरह के रोगियों का इलाज भी दो तरह से करते थे। उनका मानना है कि तमाम रोगों के मूल में ब्रह्मचर्य का नाश होना ही कारण है। इसके नतीजे पर उनका खोजनाक माघा भी होता है, जिसे सुनकर कॉलेज के अधिकांश बड़े अपने जीवन से निराश होते हैं। ब्रह्मचर्य के लाभ एक दिन वैद्यजी रंगनाथ को भी समझाते हैं तब जाकर रंगनाथ को ब्रह्मचर्य

Attested



Principal

 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi

the first of these is the fact that the
the second is the fact that the
the third is the fact that the
the fourth is the fact that the
the fifth is the fact that the
the sixth is the fact that the
the seventh is the fact that the
the eighth is the fact that the
the ninth is the fact that the
the tenth is the fact that the
the eleventh is the fact that the
the twelfth is the fact that the
the thirteenth is the fact that the
the fourteenth is the fact that the
the fifteenth is the fact that the
the sixteenth is the fact that the
the seventeenth is the fact that the
the eighteenth is the fact that the
the nineteenth is the fact that the
the twentieth is the fact that the
the twenty-first is the fact that the
the twenty-second is the fact that the
the twenty-third is the fact that the
the twenty-fourth is the fact that the
the twenty-fifth is the fact that the
the twenty-sixth is the fact that the
the twenty-seventh is the fact that the
the twenty-eighth is the fact that the
the twenty-ninth is the fact that the
the thirtieth is the fact that the
the thirty-first is the fact that the
the thirty-second is the fact that the
the thirty-third is the fact that the
the thirty-fourth is the fact that the
the thirty-fifth is the fact that the
the thirty-sixth is the fact that the
the thirty-seventh is the fact that the
the thirty-eighth is the fact that the
the thirty-ninth is the fact that the
the fortieth is the fact that the
the forty-first is the fact that the
the forty-second is the fact that the
the forty-third is the fact that the
the forty-fourth is the fact that the
the forty-fifth is the fact that the
the forty-sixth is the fact that the
the forty-seventh is the fact that the
the forty-eighth is the fact that the
the forty-ninth is the fact that the
the fiftieth is the fact that the
the fifty-first is the fact that the
the fifty-second is the fact that the
the fifty-third is the fact that the
the fifty-fourth is the fact that the
the fifty-fifth is the fact that the
the fifty-sixth is the fact that the
the fifty-seventh is the fact that the
the fifty-eighth is the fact that the
the fifty-ninth is the fact that the
the sixtieth is the fact that the
the sixty-first is the fact that the
the sixty-second is the fact that the
the sixty-third is the fact that the
the sixty-fourth is the fact that the
the sixty-fifth is the fact that the
the sixty-sixth is the fact that the
the sixty-seventh is the fact that the
the sixty-eighth is the fact that the
the sixty-ninth is the fact that the
the seventieth is the fact that the
the seventy-first is the fact that the
the seventy-second is the fact that the
the seventy-third is the fact that the
the seventy-fourth is the fact that the
the seventy-fifth is the fact that the
the seventy-sixth is the fact that the
the seventy-seventh is the fact that the
the seventy-eighth is the fact that the
the seventy-ninth is the fact that the
the eightieth is the fact that the
the eighty-first is the fact that the
the eighty-second is the fact that the
the eighty-third is the fact that the
the eighty-fourth is the fact that the
the eighty-fifth is the fact that the
the eighty-sixth is the fact that the
the eighty-seventh is the fact that the
the eighty-eighth is the fact that the
the eighty-ninth is the fact that the
the ninetieth is the fact that the
the ninety-first is the fact that the
the ninety-second is the fact that the
the ninety-third is the fact that the
the ninety-fourth is the fact that the
the ninety-fifth is the fact that the
the ninety-sixth is the fact that the
the ninety-seventh is the fact that the
the ninety-eighth is the fact that the
the ninety-ninth is the fact that the
the hundredth is the fact that the

के महत्व का पता चलता है।

रंगनाथ आत्मकेंद्रित व्यक्तित्व का अपनी युवक है। उसे किसी से कोई मतलब नहीं रहता है। वह दूक में बैठकर शिवपालगंज आता है। अपने ही राग में वह अलमस्त है चाहे दूक का ड्राइवर उसे गीयर दबामें रखने के लिए कहे या कोई चपरासी उससे दौ रूपये सेंठ ले, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

शांभुप्रसाद रंगनाथ एक मंडौली हैसियत का विश्वविद्यालयी युवक है, जो दिशाहीन उस युवा पीढ़ी का युवक है, जो ज्यादा पढ़ा-लिखा अवश्य है पर फ्रांति का उत्साह उसमें मृतप्राय है। यही कारण है कि वह अपनी दुर्बलता के कारण न केवल उदासीन और निर्जीवि-सा होकर जीवित है अपितु तमाम गलत व्यवस्थाओं को देखता हुआ भी व्यवस्थिति को कां स्वीकारने के लिए विवश है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandla, Marwar, Barmer

1. The first part of the paper is devoted to the

study of the properties of the

operator T defined by the

formula $Tf(x) = \int_0^x f(t) dt$.

It is shown that T is a

bounded operator on the

space L^p for $1 < p < \infty$.

The norm of T is

calculated and it is shown

that it is equal to 1.

The second part of the

paper is devoted to the

study of the properties of the

operator S defined by the

formula $Sf(x) = \int_0^x f(t) dt$.

It is shown that S is a

bounded operator on the

space L^p for $1 < p < \infty$.

The norm of S is

calculated and it is shown

that it is equal to 1.

The third part of the

paper is devoted to the

study of the properties of the

operator R defined by the

formula $Rf(x) = \int_0^x f(t) dt$.

रूपनबाबू अठारह वर्षीय युवक हैं,
 जो दसवीं में लगातार तीन वर्षों तक
 अनुत्तीर्ण होने के बावजूद कॉलेज के
 छात्र हैं। शिवपालगंज में उनकी पहचान
 स्थानीय नेता के रूप में भी है। उनके
 नेता होने का सबसे बड़ा आधार यह था
 कि वे सबको एक निगाह से देखते थे।
 वे दुबले - पतले, लम्बी गर्दन, लम्बे हाव
 और और लम्बे पैर वाले आदमी थे।
 जननायकों के लिए कुल - जलूल और नये
 टंग की पोशाक अनिवार्य समझकर वे
 सफेद धोती और रंगीन कुर्शर्ट पहनते
 थे और गले में रेशम का रुमाल लपेटते थे।
 धोती का कोढ़ उनके कंधे पर पड़ा रहता था।
 यों तो देखने में उनकी शक्ल एक धवराये
 हुए मरिचक बड़े जैसी थी पर उनका
 रोब अपने पिढ़ले पैरों पर खड़े दिनाईनाते
 छोड़े जैसा था।

कॉलेज में अध्यापक पढ़ाना - लिखाना
 छोड़कर एक - दूसरे के विरुद्ध झड़पत रचने
 में लगे रहते हैं, ऐसी मान्यता रूपनबाबू

Attested



Principal

 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi

की प्रारंभ से ही रहती हैं। वह पीड़ित अध्यापक मास्टर खन्ना के गुट के अधिकारों की मांग का समर्थन करता है किन्तु तब वैद्यजी मिस्टर खन्ना से जबरन त्यागपत्र दिलवा देते हैं।

गयादीन वैद्यजी की शोषण एवं आतंकपूर्ण कार्यवाहियों के साथ-साथ प्रिंसिपल की अफसरशाही और अवसरवादी कार्यवाही के विरुद्ध कुछ भी करने को तैयार नहीं रहते हैं। प्रिंसिपल को वैद्यजी का वरदहस्त प्राप्त है। वह वैद्यजी का औरत बंद कर समर्थन करता है। यही कारण है कि मास्टर खन्ना के अधिकार व मांग पत्रों को ठूकरा होता है और उनके विरुद्ध अदालती कार्यवाही करवा कर ऐसी परिस्थिति पैदा कर देता है कि मास्टर खन्ना को आखिरकार त्यागपत्र देना ही पड़ता है।

वैद्यजी जी - हुजुरी - पसंद व्यक्ति हैं किन्तु रप्पन की दालावादी मनोवृत्ति का वे विरोध नहीं करते हैं। रंगनाथ की वैदना को समझकर भी अपनी विवशता प्रकट करते

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

The first part of the paper discusses the importance of the
 research and the objectives of the study. It also outlines the
 methodology used in the study and the results of the research.
 The second part of the paper discusses the findings of the study
 and the implications of the research. It also discusses the
 limitations of the study and the need for further research.
 The third part of the paper discusses the conclusions of the study
 and the recommendations for future research. It also discusses the
 significance of the research and the contribution of the study to
 the field of research.

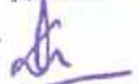
हूँ वह कहता हूँ कि अपनी चार बहनों का विवाह करना है इसीलिए मास्टर खन्ना की मांगें अनिवार्य और उचित जानकर भी वह स्वीकार नहीं करता है और वैद्यजी के आदेशों का वह पालन करता है।

बैला एक स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्य में कुशल और रामायण और माया मनोहर कहानियां पढ़ लेने भर को पढ़ी-लिखी है। तबीयत और चिरम दोनों से उसे प्रेम करने लायक समझकर रप्पन बाबू उससे प्रेम करते हैं, पर बैला यह बात नहीं जानती है। बैला बड़ों की आज्ञा मानती है और दरवाजे से बाहर नहीं निकलती है।

उस गाँव में कुछ मास्टर भी रहते हैं। मास्टर खन्ना उनमें बेवकूफ और मालवी भी कुछ-कुछ वैसे ही थे। जब गयादीन के यहाँ चोरी हो गयी तब सातों मास्टर एक साथ उनके यहाँ चोरी को लेकर सहानुभूति दिखाने आये थे।

खानाब को रप्पन बाबू पर भरोसा इसीलिए था कि कभी-कभी प्रिंसिपल को गालियाँ देकर वे कॉलेज के दुर्भाग्य की बात

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

गालियां देकर वे कॉलेज के दुर्भाग्य की बात करते थे।

छट्टी पहलवान के अन्यत्र चले चाले जाने पर रंगनाथ अकेला दफत पर टहल रहा होता है जबकि सौता वह कमरे में है। रात के लगभग ग्यारह बज रहे होते हैं। रंगनाथ को नींद नहीं आती है। वहाँ एक रेडियो था, जो कॉलेज का था, पर शास्त्रीय संगीत का एक प्रोग्राम अपनी आखिरी मंजिल पर पहुँच रहा था, जोड़े की अंधेरी रात है। रंगनाथ को रप्पन बाबू की याद आते ही अचानक बेला नाम की लड़की याद आयी, जिसे रंगनाथ ने कभी देखा न था पर उसने सुना था कि रप्पन बाबू ने उसे एक प्रेम-पत्र लिखा है किंतु दूसरी रात को रंगनाथ जब अकेला दफत पर लेटा था तब उस बेला की नहीं, वैद्यजी का गुरूसे में तपा हुआ वीर्यमय चेहरा याद आया।

वैद्यजी की यही विशेषता थी कि वे मुनमुनाते नहीं थे, आज उन्होंने मुनमुनाकर रंगनाथ का दिल तोड़ दिया। उसे आशा थी कि वे गरजेंगे उसके बाद वरसेंगे। पर पहले तो वे गरजे और बाद में मुनमुनाकर बैठ गये और

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



दुम हिलाने और मुनमुनाने का काम साव-साव निभाकर उन्हें इशारा किया था कि जे-ऑपरेटिव यूनियन के हिसाब का स्पेशल ऑडिट कराना जरूरी होगा।

रंगनाथ रात में ठीक से सो नहीं पाया था, सोच भी नहीं पाया था, पर जागते ही अपने बारे में एक बात उसने सोच ली। कुछ महीने पहले, एक बंती बीमारी से उठने के बाद वह वहाँ केवल अपनी तन्दुरुस्ती सुधारने आया था। अचानक उसे सोचा कि उसकी तन्दुरुस्ती सुधारने आया था। कुछ मामलों में उसे रप्पनबाबू पर भरोसा था। वह धनता है कि जब वे बैवकूफ बनते हैं तो अपनी इच्छा से, बैवकूफ बनना उनके लिए लगभग स्वेच्छा की बात थी न कि मजबूरी या शौक। रंगनाथ सोचता है कि ऐसी कोई बात वैद्यजी जरूर करने जा रहे हैं क्योंकि वैद्यजी के क्रोध की चुमाईश देखकर लगा था कि वे तिलमिलाने दूर हैं।

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



प्रिंसिपल साहब कॉलेज की ओर से आते दिखायी
 दिये। हाल समाचार पढ़े जाने पर रंगनाथ ने
 लड़े ही शिष्टाचार से कहा - आपकी कृपा से।
 और बाद में पुनः पूछने पर ही रंगनाथ ने कहा -
 रिसर्च का काम इतने दिन से दूरा हुआ है।
 गर्मियों में पूरा करना है। जब प्रिंसिपल साहब ने
 कहा - "आप जानते ही हैं खन्ना ने हस्तीका दे
 दिया है। इतिहास के लेक्चर की जगह खाली
 हुई है उसी में आप क्यों नहीं लग जाते। ठाठ
 से मामा के यहां रहें, कॉलेज में दो घंटा
 पढ़ाई बाकी समय रिसर्च कीजिए। यह सुनकर
 रंगनाथ को जान पड़ा कि उसकी देह का सारा
 खून झपटकर साँप की तरह उसके मल्ले में
 पहुँच गया है। उसने तीखेपन के साथ कहा -
 मैं आपके यहां मास्टरी करूँगा ? और वह भी
 खन्ना की जगह। खन्ना को कॉलेज से निकालने
 की बात रंगनाथ को मालूम थी। प्रिंसिपल
 की बात - जगह खन्ना के जाने से हुई या
 मालवीय के मरने से - आपको इससे क्या
 मतलब ? आपके घर का बाग है, आम खाइए।
 पैड़ क्यों गिन रहे हैं ?

Attested



Principal

 Bhagwati College of Education
 Karam, Mandar, Ranchi

1. The first part of the paper is devoted to a discussion of the

main results of the paper. The second part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The third part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The fourth part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The fifth part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The sixth part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The seventh part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The eighth part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The ninth part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The tenth part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The eleventh part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The twelfth part is devoted to a

discussion of the main results of the paper. The thirteenth part is devoted to a

इसका कोई जवाब न पाकर वे रंगनाथ को पुचकारने लगे। अंत में जब रंगनाथ का तमतमाता चैष्टा दिखायी पड़ा तब प्रिंसिपल ने उदास होकर कहा -

"बाबू रंगनाथ, तुम्हारे विचार बहुत ऊँचे हैं। पर फूल मिलाकर उनसे यही साबित होता है कि तुम गधे हो।"

मदारी के सामने मुँह फुलाये बैठे दोनों को देखने से लगा जैसे कि वे उठेंगे तो भरतनाट्यम से नीचे नहीं नचेंगे। झुगझुगी एक नयी ताल पर बज रही थी।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



रागदरबारी के माध्यम से आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार

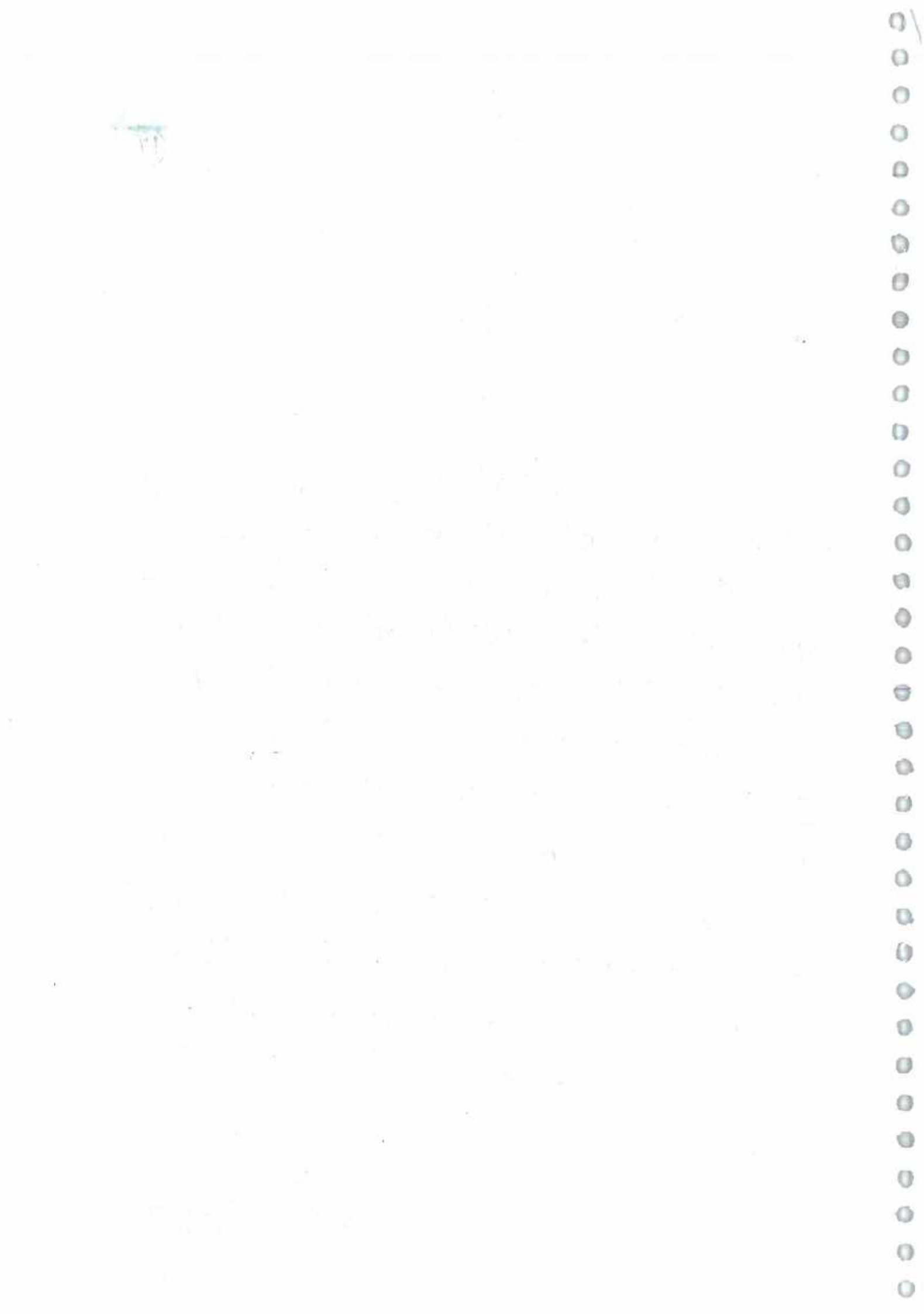
राग दरबारी व्यंज्य - कथा नहीं है, इसका संबंध एक बड़े नगर से कुछ दूर वैसे ही गाँव शिवपालगाँव की जिंदगी से है, जो वर्षों की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों के सामने धिसट रही है। गाँव की कथा के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की मुख्यहीनता को सहजता और निर्ममता से अनावृत करने वाला उपन्यास है। रागदरबारी। शुरू से आखीर तक इतने निस्संग और शोक्षक व्यंग्य के साथ लिखा गया हिंदी का शायद यह पहला हस्त उपन्यास है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



फिर भी यह उसी जिंदगी का दस्तावेज है।

उपन्यास का महत्व

1968 में राग दरबारी का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण साहित्यिक घटना थी। 1970 में इसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 1986 में एक दूरदर्शन-धारावाहिक के रूप में इसे लाखों दशकों की सराहना प्राप्त हुई। वस्तुतः राग दरबारी हिंदी के कृद कालजयी उपन्यासों में एक है। लेखन 1964 के अंत में शुरू हुआ और अपने अंतिम रूप में 1967 में समाप्त हुआ। 1968 में इसका प्रकाशन हुआ और 1969 में इस पर मुझे साहित्य अकादमी

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

का पुरस्कार मिला। तब से अब तक इसके दोनों संस्करण और पुनर्मुद्रण हो चुके हैं। 1969 में ही एक ही सुविज्ञात समीक्षक ने अपनी बहुत लंबी समीक्षा इस वाक्य पर समाप्त की : अपठित रह जाना ही इसकी मित्या है।

इस उपन्यास की भाषा कहानी की जान है। ग्रामीण तथा शहरी परिवेश का इतना अनौखा वर्णन शायद ही कहीं देखने को मिलता है। उपन्यास के कड़े अंश इस प्रकार हैं : शहर का किनारा। उसे ढोते ही भारतीय देहात का महासागर शुरू हो जाता है। वहीं एक दक खड़ा था। जैसे कि सत्य के होते हैं, इस दक के भी कई पहलू थे। पुलिसवाले उसे एक ओर से देखकर कह सकते थे

Attested



Principal

 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi

(11)

1. The first part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

2. The second part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

3. The third part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

4. The fourth part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

5. The fifth part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

6. The sixth part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

7. The seventh part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

8. The eighth part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

9. The ninth part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

10. The tenth part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

कि वह सड़क के बीच में खड़ा है, दूसरी ओर से देरतकर डाइवर कह सकता था कि वह सड़क के किनारे पर है चालू फेंशन के हिसाब से डाइवर ने ट्रक का दाहिना दरवाजा खोलकर डूने की तरह फैला दिया था। इससे ट्रक की खूबसूरती बह गई थी, साथ ही यह खतरा मिट गया था कि उसके वहां होते हुए कोई दूसरी सवारी भी सड़क के ऊपर से निकल सकती है। सड़क के एक ओर पैदल-स्टेशन था; दूसरी ओर दायरों लड़की और टीन के सड़े टुकड़े और स्थानीय हमता के अनुसार निकलनेवाले कबाड़ की मदद से खड़ी की हुई दुकानें थी। पहली निगाह में ही मालूम हो जाता था कि दुकानों की गिनती नहीं हो सकती। भाषा के माध्यम से व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया।

Attested



Principal



निष्कर्ष

'रागदरवारी' उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास है। इसका प्रत्येक प्रसंग व्यंग्य-चैतना से पाठक को चमत्कृत करनेवाला है। इस उपन्यास में वर्तमान जीवन के समस्त अवमूल्य, विसंगतियाँ, सामाजिक विघटन, युवाओं की दिशाहीनता, रिश्ततरवारी, असुरक्षा-बोध, अस्वस्थ नैतृत्व, गुटबाजी, पलायन, विद्रूपता आदि सभी कुछ एक साथ उपलब्ध हैं। व्यंग्य इस उपन्यास में न केवल लेखक की यथार्थवादी दृष्टि का समर्थ प्रमाण है अपितु यथार्थ को सर्वथा नष्ट रूप में उपस्थित करने में वह सहायक हुआ है। इतना ही नहीं लेखक ने उपन्यास में यत्न-तत्न वास्तविकता की पकड़ को सुदृढ़ता से अपने नियंत्रण में रखने के लिए विनोद और आइरनी का आश्रय लिया है, जिससे शिवपालगंज की प्रतीकात्मकता

Attested

पिता

पिता, आपका नाम है, जो
मेरे दिल में बसा है।
आपका हाथ, जो मेरी
आँखों को रोने से रोकता है।
आपका स्पर्श, जो मेरी
दिल में प्रेम भरता है।
आपका स्वर, जो मेरी
दिल में गीत गाता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।

पिता, आपका नाम है, जो
मेरे दिल में बसा है।
आपका हाथ, जो मेरी
आँखों को रोने से रोकता है।
आपका स्पर्श, जो मेरी
दिल में प्रेम भरता है।
आपका स्वर, जो मेरी
दिल में गीत गाता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।
आपका प्रेम, जो मेरी
दिल में जीवन भरता है।

सफलता के साथ अभिव्यक्त हो सकी
है। उपन्यास - कला की दृष्टि से वह
निश्चय ही सर्वोत्कृष्ट और विशिष्ट
उपन्यास है।

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



प्रश्न - अभ्यास

I लघु उत्तरीय प्रश्न

- (क) श्री लाल शुक्ल का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
- (ख) श्री लाल शुक्ल के प्रमुख उपन्यास कौन से हैं ?
- (ग) श्री लाल शुक्ल का निधन कब हुआ ?

II दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- (क) उपन्यास कला की दृष्टि से रागदरवारी उपन्यास की समीक्षा करें।
- (ख) बेला का चरित्र चित्रण करें।
- (ग) रूपन बाबू का चरित्र - चित्रण करें।

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

THE END

I. THE END

THE END

THE END

THE END

THE END

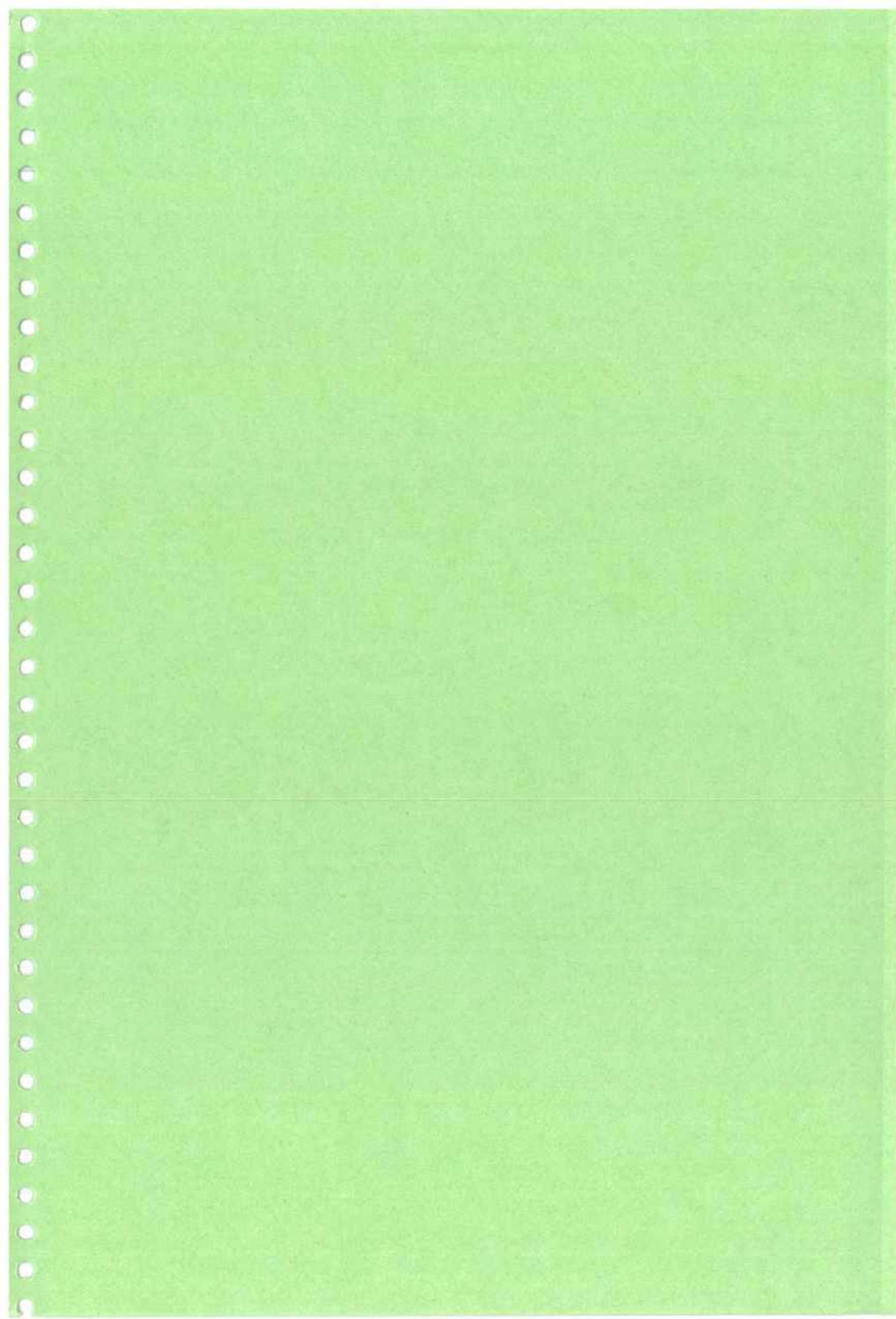
THE END

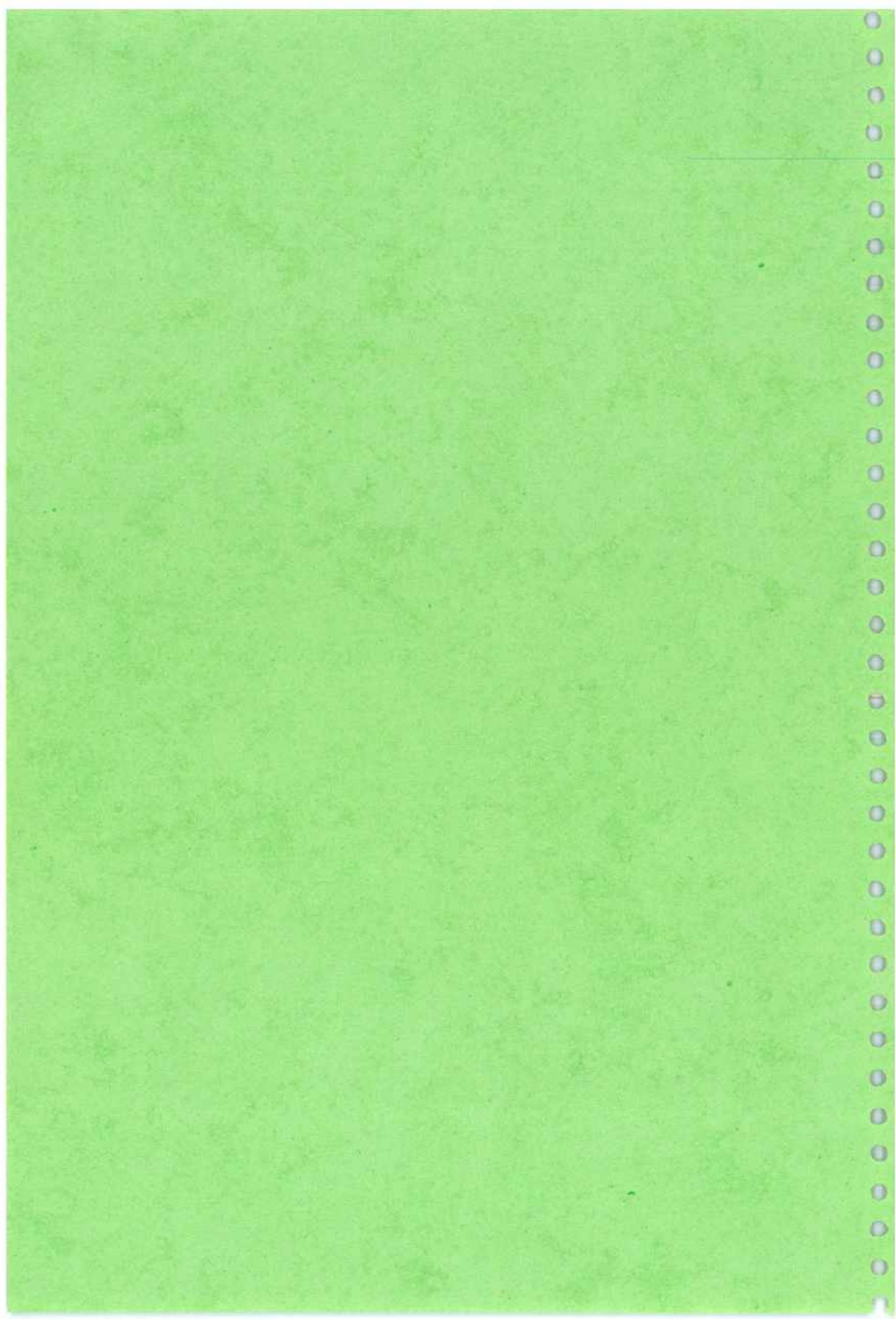
THE END

THE END

THE END

THE END





BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION



An Abode Of Education

Kandari, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session 2018-20

PROJECT WORK- III

ON

EPC - 1

READING AND REFLECTING TEXT

भारतीय संस्कृति एवं लेखन कला

मणिपुर

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION
INTERNAL

Guided By

Asst. Prof.

Binita Chaudhary

Submitted by:-

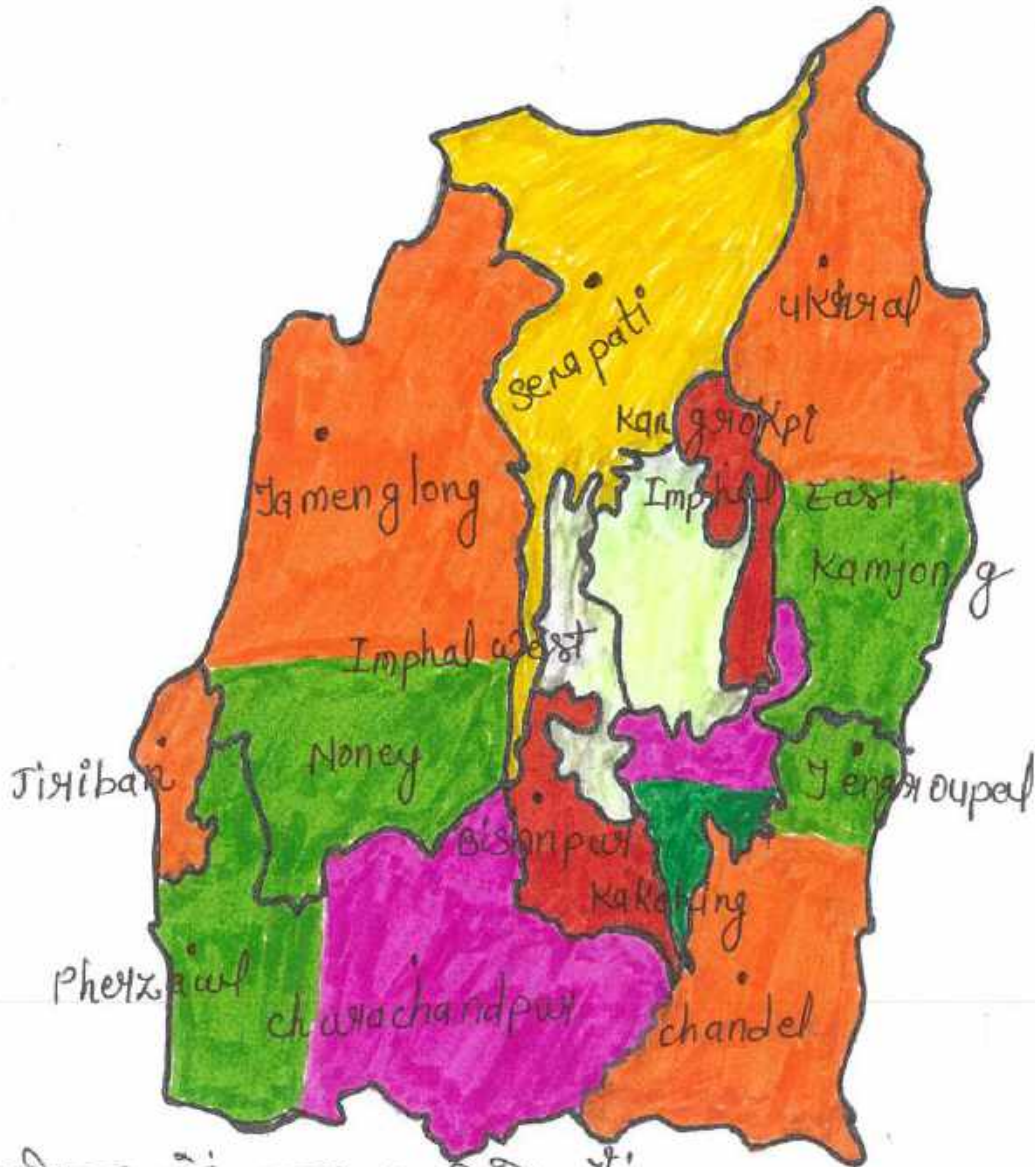
Name :- NUTAN TOPPO

Roll No :- 41

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

मानचित्र - मणिपुर



मणिपुर में कुल 16 जिले हैं—

- १) विष्णुपुर जिला
- २) इरवेंदपुर जिला
- ३) चंदेल जिला
- ४) इंफाल ईस्ट जिला
- ५) सेनापति जिला
- ६) तमोंगलोंग जिला

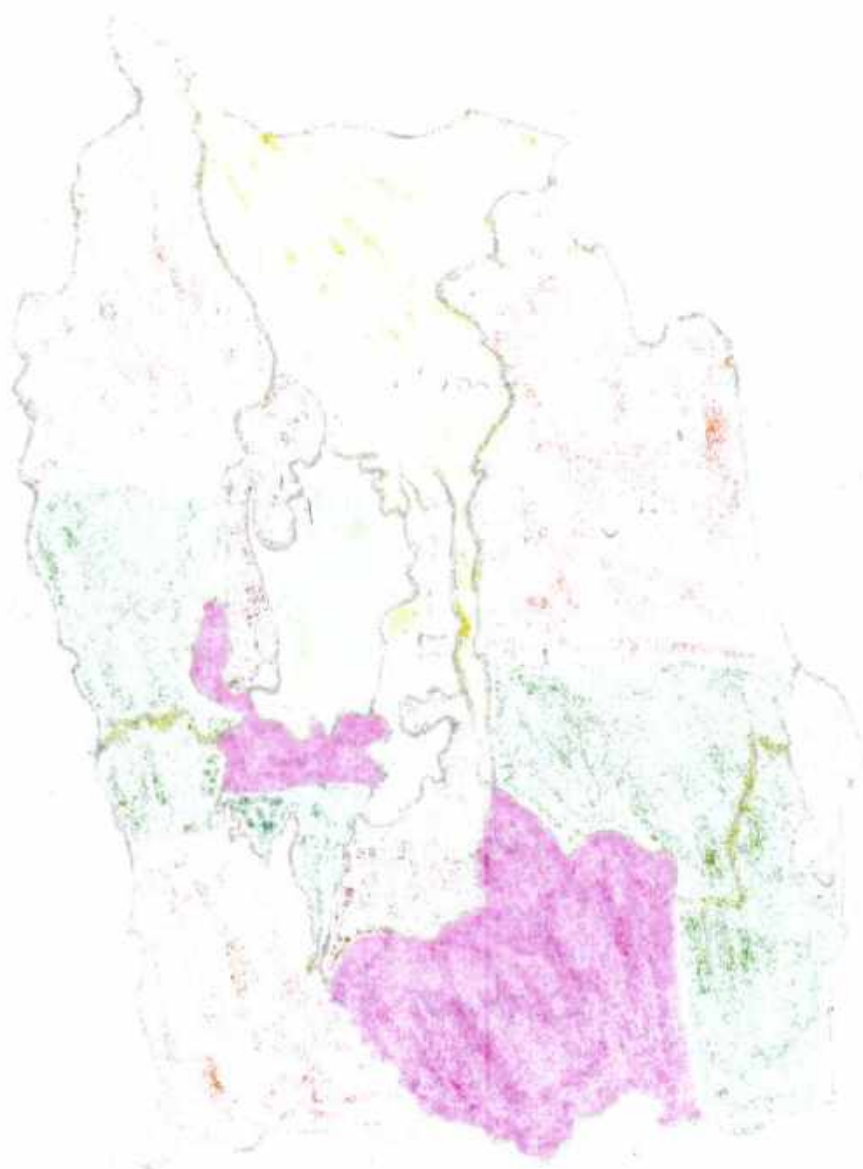
- ७) वौतल जिला
- ८) उखरुल जिला
- ९) इंफाल वेस्ट जिला
- १०) कपिंकंग जिला
- ११) जिरीबाम जिला
- १२) कमजोंग जिला

- १३) नौनी जिला
- १४) फेरयाँल जिला
- १५) टेंगनू पाल जिला
- १६) कांगपोकापी जिला

Attested

[Signature]

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



भारत



राजधानी	इम्फाल
जनसंख्या	28,55,794
- घनत्व	129/किमी ²
क्षेत्रफल	22,347 किमी ²
जिले	16
राजभाषा	मणिपुरी

Attested

Principal

 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi



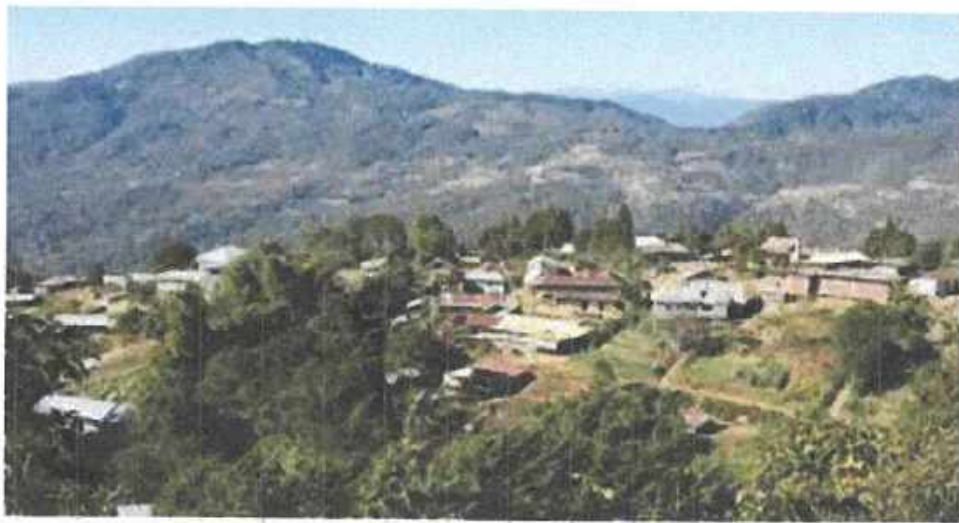
मणिपुर भारत का एक पूर्वोत्तर राज्य है।
 इसकी राजधानी है इंफाल। मणिपुर
 के पड़ोसी राज्य हैं। उत्तर में नागालैंड
 और दक्षिण में मिज़ोरम, पश्चिम में
 असम, और पूर्व में इसकी सीमा
 म्यांमार से मिलती है। इसका क्षेत्रफल
 २२, ३५४ वर्ग कि. मी. (८, ६२८ वर्ग मील)
 है। यहां के मुख्य निवासी मैडो जनजाति
 के लोग हैं, जो यहां के बाटी क्षेत्र
 में रहते हैं। इनकी भाषा मैडो-लोन
 है, जिसे मणिपुरी भाषा भी कहते हैं।
 यह भाषा ११.२ में भारत में संविधान
 की आठवीं अनुसूची में जोड़ी गई है
 और इस प्रकार इसे एक राष्ट्रीय
 भाषा का दर्जा प्राप्त हो गया है।
 यहां के पर्वतीय क्षेत्रों में नागा
 व कुकी जनजाति के लोग रहते
 हैं। मणिपुरी को एक संवैधानिक
 सीमावर्ती राज्य माना जाता है।

Attested



Principal

 Barathi College of Education
 Kamri, Manipal, Ranchi



Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

परिचय

मणिपुर का शाब्दिक अर्थ 'आमूषणों की भूमि' है। भारत की स्वतंत्रता के पहले यह रियासत थी। आजादी के बाद यह भारत का एक केंद्रशासित राज्य बना। यहां की राजधानी इम्फाल है। यह संपूर्ण भाग पहाड़ी है। जलवायु गरम एवं तर है तथा वार्षिक वर्षा का औसत 65 इंच है। यहां जागा तथा कुकी जाति की लगभग 60 जनजातियाँ निवास करती हैं। यहां के लोग संगीत तथा कला में बड़े प्रवीण होते हैं। यहां यद्यपि कई बोलियाँ बोली जाती हैं। पहाड़ी ढालों पर चाय तथा प्याहियों में धान की उपजें प्रमुख हैं। यहां से होकर एक सड़क बर्मा की जाती है।

इस राज्य में प्राकृतिक संसाधनों का प्रचुर भंडार है। यहां की प्राकृतिक दृष्टि दैर्घ्य योग्य है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

14

1. The first part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom.

2. In the second part, we shall consider the question of the structure of the atom in more detail. We shall begin with the consideration of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

3. In the third part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

4. In the fourth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

5. In the fifth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

6. In the sixth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

7. In the seventh part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

8. In the eighth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

9. In the ninth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

10. In the tenth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

11. In the eleventh part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

12. In the twelfth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

13. In the thirteenth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

14. In the fourteenth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

15. In the fifteenth part, we shall consider the question of the structure of the atom in the case of a single electron, and then pass on to the case of many electrons.

यहाँ तरौताजा करने वाले जल प्रपात हैं,
 रंग - बिरंगे फूलों वाले पौधे हैं, दुर्लभ
 वनस्पतियाँ व जीव - जंतु हैं, पवित्र
 जंगल हैं, हमेशा बहने वाली नदियाँ हैं,
 पर्वतों - पहाड़ियों पर बिरबरी हरी विमा
 है और टेढ़े - मेढ़े गिरने वाले झरने
 हैं। लोकटक झील यहाँ की एक महत्वपूर्ण
 झील है। भौतिक आधार पर राज्य को
 दो भागों में बांटा जा सकता है, पहाड़ियाँ
 व घाटियाँ। चारों ओर पहाड़ियाँ हैं और
 बीच में घाटी है। इस ही प्रकार प्रकृति
 की प्राचीन गौरव है। राज्य की कला
 व संस्कृति समृद्ध है जो विश्व मानचित्र
 पर इसकी समृद्धि को दर्शाती है।

Attested



 Principal
 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi



Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

महाभारतकालीन माणिकपुर

45

महाभारतकालीन प्राचीन माणिकपुर राजकुमारी
चितांगदगा, अर्जुन पचात पुतों बब्रुवाहन
से उल्लेख मिलते हैं। महाभारत में
शौहा बाबरनवासन, अर्जुन और माणिकपुर
की राजकुमारी चितांगदा के पुत वे।
महारथी अर्जुन राजा चितवहना की
पुती चितांगदा के साथ प्रेम हुआ था।
माणिकपुर भ्रमण के दौरान अर्जुन ने
चतरंगडा को सतरंगी शिरौड बिली फूल
देकर प्रभावित किया था जो आज
भी बिष्णुप्रिया माणिकपुरी नाम के सम्प्रदाय
सम्प्रदाय की पौराणिक वर्णन में पाए
जाते हैं।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Handwritten text in Devanagari script, likely a letter or document, enclosed in a decorative border. The text is faint and mostly illegible due to fading and bleed-through from the reverse side. It appears to be a formal communication, possibly a letter of introduction or a report.

Handwritten signature and stamp at the bottom center of the page. The signature is in Devanagari script. Below it is a circular official stamp, also in Devanagari, which likely identifies the sender or the official capacity.

हस्तशिल्प

देश की विभिन्न हस्तशिल्प कलाओं में राज्य के हस्तशिल्प उद्योग का अनुठा स्थान है। इसके अंतर्गत बांस व लैट के बने उत्पादों के साथ-साथ मिट्टी के बर्तन बनाने की संस्कृति भी शामिल है। मणिपुर में मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रथा काफी पुरानी है और यह उद्योग मुख्यतः खंडो, सिकमाई, चैरेन, बोंगजाओ आदि जिले में किया जाता है। चूंकि बांस व लैट काफी मात्रा में उपलब्ध है, ठेकरी बनाना यहां के लोगों का लोकप्रिय व्यवसाय बन गया है। इसके अतिरिक्त मढ़ली मारने के उपकरण भी लैट व बांस के बनार जाते हैं। धरेलू के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इन सभी उत्पादों की काफी मांग है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



हथकरधा

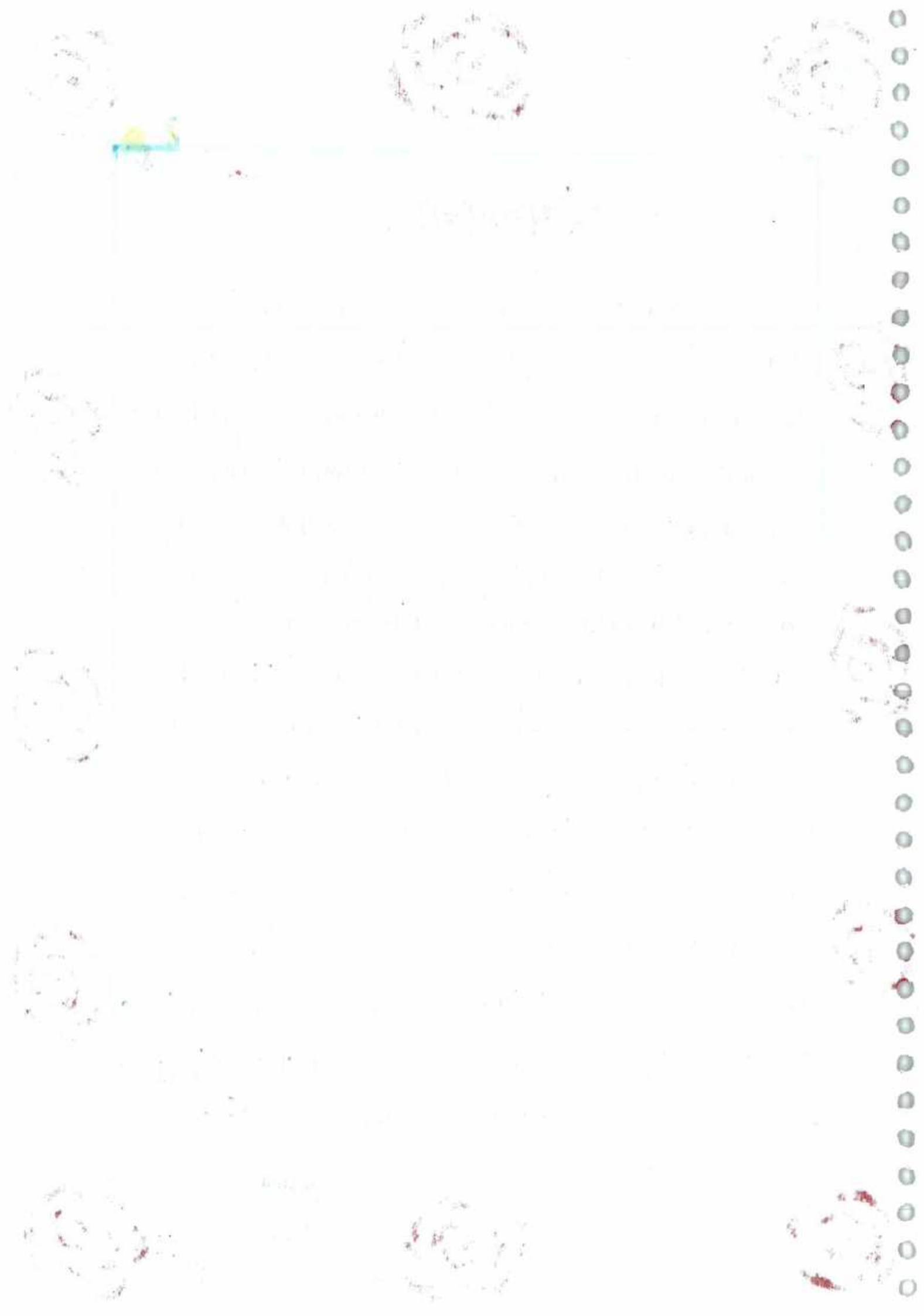
हथकरधा उद्योग राज्य का सबसे बड़ा कृषि उद्योग है। यहां यह उद्योग अनादि काल से फल-फूल रहा है। राज्यपथ में यह सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध करा रहा है खासकर महिलाओं को। मणिपुर के प्रमुख हथकरधा उत्पादक साड़ी, चादर, पर्दे, फैशनवाले कपड़े, तकिए के कवर आदि हैं। अधिकांश जुलाहे जिन्हें हथकरधा व महीन डिजाइनिंग के लिए जाना जाता है। वे बांग्लादेश, बर्मा, कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका आदि से हैं जो उत्कृष्टतम सिल्कन आदि उत्पन्न करने के लिए प्रसिद्ध हैं। मणिपुरी कपड़े व बालों की राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में काफी मांग है। तीन सरकारी एजेंसियां हथकरधा उत्पादन का काम करती हैं ये हैं - मणिपुर डेवलपमेंट सोसायटी (MPS), मणिपुर हैंडलूम एंड हैंडीक्राफ्ट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (MHHDC), मणिपुर स्टेट हैंडलूम वीवर्स को-ऑपरेटिव सोसायटी (MSABCS)

Attested



Principal

 Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi





48

कृषि और खाद्य प्रसंस्करण

राज्य में कृषि के अनुकूल परिस्थितियाँ हैं। यहाँ की जलवायु और मिट्टी, कृषि व बागवानी प्रायः सभी फसलों उगाने के लिए उपयुक्त हैं। राज्य में प्रचुर मात्रा में धान, गेहूँ, मक्का, दलहन व तिलहन (जैसे तेल, मूंगफली, सोयाबीन, भुजभुरवी आदि) की खेती की जाती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न फलों जैसे अमनास, नींबू, केला, नारंगी आदि और सब्जियाँ जैसे फूलगोभी, बंदगोभी, टमाटर व मटर आदि का उत्पादन किया जाता है। इसके फलस्वरूप खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र, कृषि, बागवानी, मछली पालन, मुर्गी पालन, पशु पालन और वनों के विविधीकरण तथा वाणिज्यीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस उद्योग के महत्व को देखते हुए राज्य सरकार ने इफाल में खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण केंद्र और 'खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण हॉल' की स्थापना की है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi





Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पर्यटन

अपनी विविध कसूरतियों व जीव-जंतुओं के कारण मणिपुर को 'भारत का आमुषण' व 'पुरव का स्विटजरलैंड' आदि विविध नामों से संबोधित किया जाता है। लूमाने वाले प्राकृतिक दृश्यों, में विलक्षण फूल-पौधों, निर्मल वन, बहाराती नदियां, पहाड़ियों पर झाई हरियाली शामिल है। इन सबके अलावा पर्यटकों के लिए कई आकर्षण हैं जो राज्य में पर्यटन के विकास के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है।

श्री गौविंद जी मंदिर, रवारीम बंद बाजार युद्ध कावेस्तान, शहीद मीनार, नुपा सान (महिलाओं का युद्ध) मैमोरियल कॉम्प्लेक्स, रवांधापात उद्यान, आईरनर मैमोरियल (मोइरांग), लोकटक झील, कीवूल लामजो राष्ट्रीय उद्यान, विष्णुपुर रिषत विष्णु मंदिर, सेंद्रा, मोरेह सिराय गांव, सिराय की पहाड़ियां, डूको बाड़ी, राजकीय

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kanchi, Mandar, Ranchi

Math

1. The area of a rectangle is 48 square units. The length is 8 units. What is the width?

2. A triangle has a base of 10 units and a height of 6 units. What is its area?

3. A circle has a radius of 5 units. What is its circumference?

4. A square has a side length of 7 units. What is its perimeter?

5. A right triangle has legs of 3 units and 4 units. What is the length of the hypotenuse?

6. A rectangle has a length of 12 units and a width of 5 units. What is its perimeter?

7. A triangle has a base of 8 units and a height of 3 units. What is its area?

8. A circle has a diameter of 10 units. What is its area?

9. A square has a side length of 9 units. What is its area?

10. A right triangle has a hypotenuse of 5 units and one leg of 3 units. What is the length of the other leg?

अजायबधर, कैना पर्यटक निवास, खोंगजोम वार मेंमोरियल आदि मणिपुर के कुछ महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल हैं। मणिपुर देश के सुदूर उत्तरपूर्वी कोर पर स्थित है और, इसका अधिकांश पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ निवेश के कई अवसर हैं। यहाँ कई ऐसे क्षेत्र भी हैं जहाँ निवेशकों को आकर्षित करने के लिए काफी संभावनाएँ हैं।

यहाँ के दर्शनीय स्थलों में इम्फाल, उख्रूल प्रसिद्ध हैं। इम्फाल में कांगला पार्क, गोविंद मंदिर वहाँ के बाजार, टीकेन्द्रजित पार्क प्रसिद्ध हैं तो उख्रूल की पहाड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। चुडाचांदपुर जिले में बौकतक झील प्रसिद्ध है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

54

100

अर्थव्यवस्था

कृषि व कृषि आधारित उद्योग अर्थव्यवस्था का आधार हैं। राज्य सूचना प्राद्यौगिकी आधारित व्यवसायों के लिए एक उपयुक्त स्थान है। यहां उच्च शिक्षा की व्यवस्था है, यहां निवेश की अपार संभावनाएं हैं, खासकर कृषि व खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में हथकरघा, दस्तकारी और पर्यटन के क्षेत्र में कई संभावनाएं हैं। इन क्षेत्रों में निवेशकों को आकर्षित करने के लिए सरकार ने कई नीतियां तैयार की हैं। साथ ही निवेशकों को आकर्षित करने के कई प्रोत्साहन देने की भी योजना की गयी है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भौगोलिक स्थिति

भारत के पूर्वी सीमा पर स्थित यह राज्य २४.४५ डिग्री उत्तर और २५.६८ डिग्री उत्तर अक्षांश व ९५.५४ डिग्री पूर्वी देशांतर के बीच पड़ता है। एक ओर तो पूर्व में म्यांमार है तो नगालैंड उत्तर-पश्चिम दिशा में है, तो मिज़ोरम दक्षिण में है। यह पूरे २२,३२५ किलोमीटर में फैला है।

मणिपुर की भौगोलिक स्थिति दर्शनीय है। उत्तरी तथा पूर्वी इलाकों में ऊँची पहाड़ियाँ हैं और मध्य भाग में मैदानी समतल है। यहां हर पहाड़ के बीच में कोई न कोई नदी बहती है। इम्फाल नदी यहां की प्रमुख नदी है।

Attested

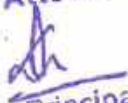


Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



The Travelling Stocker

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

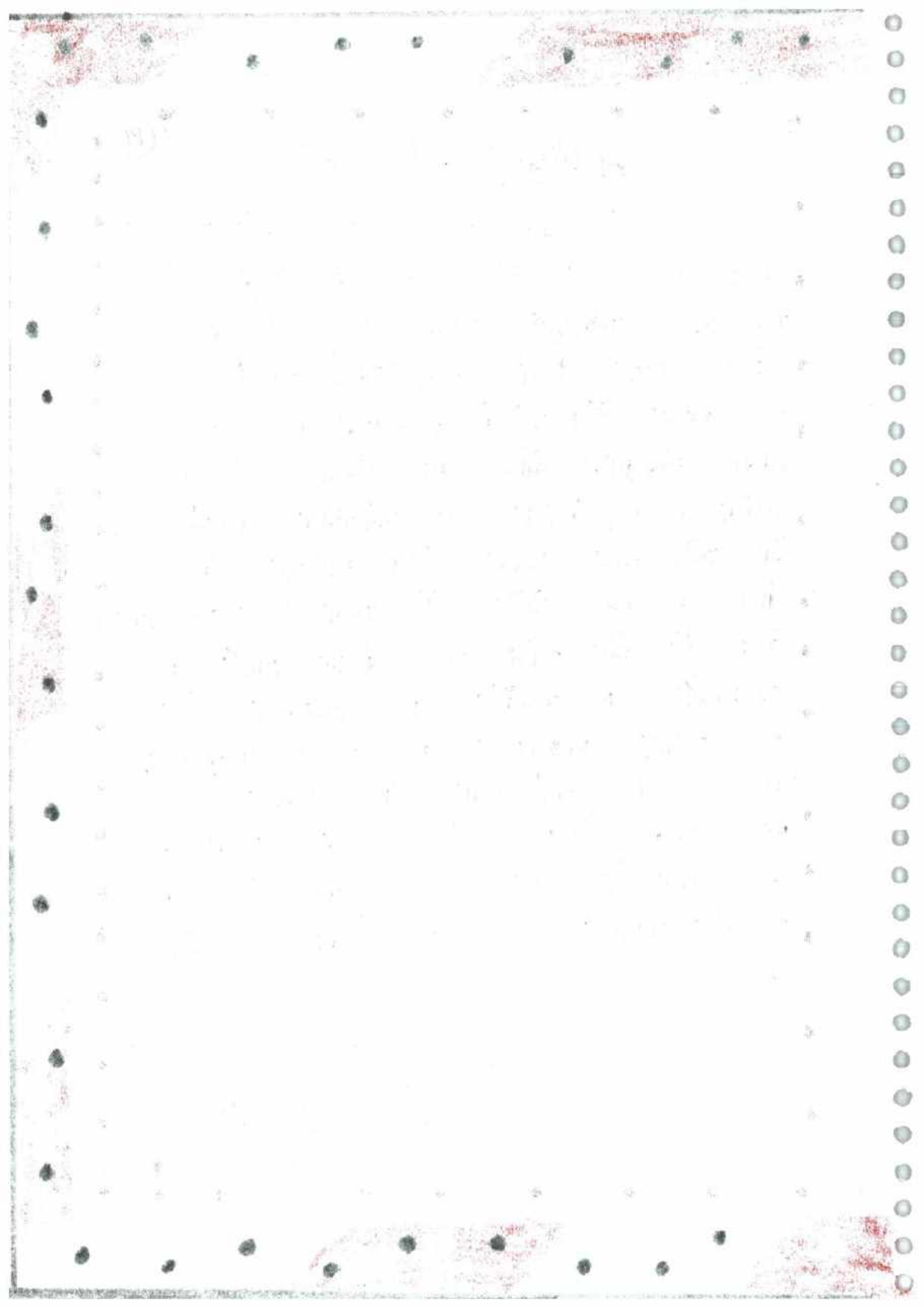
माणिपुर के लोग

वहाँ तीन प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। बाटी में मीतई जनजाति और बिष्णुप्रिया माणिपुरी रहती हैं तो नागा और कुकी - चिन जनजातियाँ पहाड़ियों पर रहती हैं। प्रत्येक जनजाति वर्ग की खास संस्कृति और रीति रिवाज हैं जो इसके नृत्य, संगीत व पारंपरिक प्रथाओं से इष्टिगोचर होता है। माणिपुर के लोग कलाकार होते हैं। साब ही सृजनशील होते हैं जो उनके द्वारा तैयार खादी व कस्तूरी के उत्पादों में झलकती है। ये उत्पाद विश्वभर में अपनी डिज़ाइन, कौशल व उपयोगिता के लिए जाने जाते हैं। यहां नेपाल से आकर बसे नेपालियों की भी काफी संख्या है, जो माणिपुर के कई इलाकों में बसे हैं।

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



सातरंगी शिरोइ बिली

माणिपुर को देश को 'ऑर्किड बास्केट' भी कहा जाता है। यहाँ ऑर्किड पुष्प की 500 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। समुद्र तल से लगभग 5000 फीट की ऊँचाई पर विषम शिरोइ पहाड़ियों में एक विशेष प्रकार का पुष्प शिरोइ बिली पाया जाता है। शिरोइ बिली का यह फूल पूरे विश्व में केवल माणिपुर में ही पैदा होता है। इस अनोखे और दुर्लभ पुष्प की खोज फ्रैंक किंगडम वॉर्ड नामक एक अंग्रेज ने 1946 में की थी। यह खस बिली केवल मानसून के महीने में पैदा होता है। इसकी विशेषता यह है कि इसे सूझावशी से देरवने पर इसमें सात रंग दिखाई देते हैं। इस अनोखे बिली को 1948 में बंदन विषम रॉयल हॉर्टिकल्चरल सोसाइटी ने मेरिट ग्राइज से भी नवाजा था। हर वर्ष उत्तरवर्त जिले में शिरोइ बिली फेस्टिवल का आयोजन बड़ी धूम-धाम से होता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

विनलक्ष्मी नैग्राम

विनलक्ष्मी नैग्राम एक मानवीय, बेरक और महिला कार्यकर्ता हैं, जो लिंग अधिकारों की वकालत और महिलाओं के नेतृत्व में निरस्तकरण आंदोलनों के उद्देश्य से बहुत संस्कृति को गिरफ्तार करने और विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत में अपने गृह राज्य मणिपुर के लिए जाते जाने के उद्देश्य से हैं। मणिपुर और उत्तर-पूर्व भारत में इस क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें "द फेस फंड वॉयस ऑफ नार्थ ईस्ट" नाम से जाना जाता है।

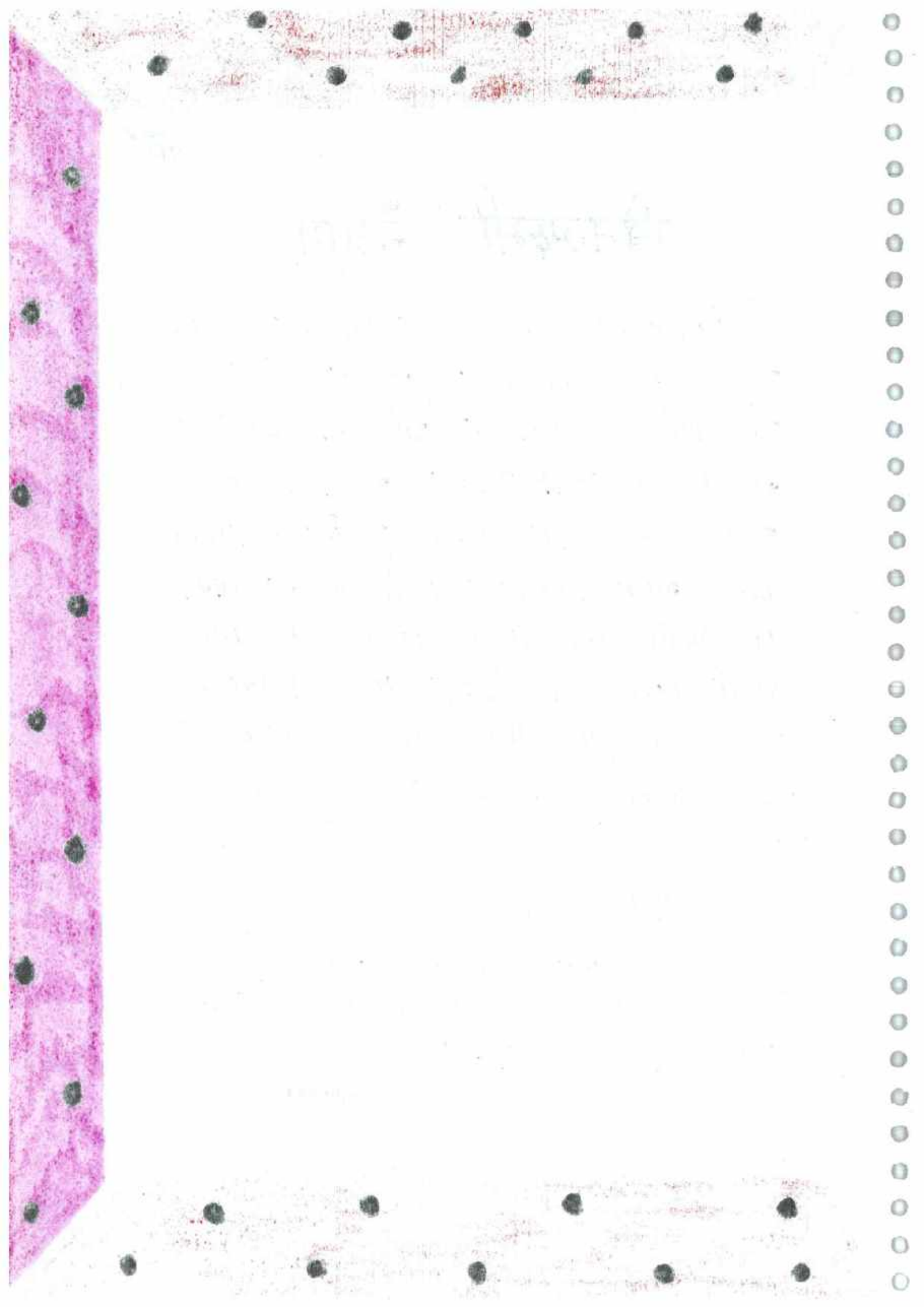
नैग्राम ने 2004 में केंद्रीय आम्स काउंटर आॅफ इंडिया, मणिपुर, महिला गन सर्विइवर्स नेटवर्क, मणिपुर

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandamandir, Ranchi



और महासचिव कंट्रोल आर्म्स काउंटेडेशन ऑफ इंडिया (CAFI) जैसे कई संस्थानों की स्थापना की हैं।

जीवनी

नेपाम का जन्म पूर्वोत्तर भारत के मणिपुर के इम्फाल में हुआ था। उनके माता पिता नेपाम बिहारी और वैशेम्बम बुबमहल हैं। वह हिंसा और खून खराबे के माहौल में इम्फाल में पली-बढ़ी, जिसने उसके भविष्य के काम को आकार दिया और जब वह पैदा हुई तो सेना द्वारा लगाए गए इम्फाल में एक सामान्य कपड़ों भी था। उन्होंने इम्फाल में स्कूली शिक्षा प्राप्त की और अपनी हाई स्कूल लीविंग सर्टीफिकेट परीक्षा में दूसरी रैंक प्राप्त की, जिसके लिए

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Dear Mr. [Name]
[Faint handwritten text]

[Faint handwritten signature]

[Faint handwritten text, likely the body of a letter or a list of items]

उन्हें अमुसाणा और गौरी मेमोरियल अवार्ड
मिला। वह दिल्ली विश्वविद्यालय से
इतिहास में स्नातकोत्तर डिग्री और जवाहरलाल
नेहरू विश्वविद्यालय से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों
में दाक्षिण एशियाई अध्ययन में मास्टर
ऑफ फिलॉसफी की डिग्री प्राप्त करती
हैं।

नेपाम भारत - म्यांमार / बर्मा क्षेत्र
में दोटे टापेयारों के शमन पर शोध
करने के लिए ब्लॉकर फेलोशिप के
प्राप्तकर्ता हैं। उन्हें "माहिलाओं और सुदृढ-
निरस्तरीकरण" के विशिष्ट प्रासंगिकता के
संदर्भ समाधान और शांति प्रक्रिया में
अपने शोध कार्य के लिए दलाई लामा
फाउंडेशन के WISCOMP स्कॉलर ऑफ
पीस अवार्ड भी मिला है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Handwritten text at the top of the page, possibly a title or header.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text line.

Handwritten text at the bottom of the page, possibly a footer.

